श्रीललिता-सहस्र-नाम

पुष्प १

साधना-विधि
नामावली द्वारा
जपादि

हिन्दी व्याख्या
प्रार्थना एवं
स्तुति

श्री द्वारका मठ

श्री शृङ्गेरी मठ

जगद्-गुरु श्रीशङ्कराचार्य जी द्वारा
चारों दिशाओं में
श्रीललिता-त्रिपुर-सुन्दरी की आराधना

प्रकाशक : परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान
श्रीचण्डी-धाम, अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६

उपयोगी पुस्तकें

पुस्तक	मूल्य
अद्भुत दुर्गा सप्तशती	१५०)
अलोप-शङ्करी देवी	५)
अघोर-पन्थ का निरूपण	२५)
अध्यात्म-योग	१०)
अक्षय-वट	१०)
अनुभूत साधना	२५)
आनन्द-लहरी	१२)
आदि-शङ्कराचार्य अङ्क	१०)
आपदुद्धारक श्रीबटुक-भैरव स्तोत्र	२५)
कमला-कल्पतरु, पुष्प-१, २, ३	१२०)
काली-पूजा-पद्धति	१००)
काली-नित्यार्चन	१५)
कृष्ण-साधना	२५)
काली-कल्पतरु	३००)
काश्मीर की वैचारिक परम्परा	१०)
कुण्डलिनी-साधना	४०)
कुम्भ-पर्व अङ्क	१०)
गङ्गा-यमुना-सरस्वती पूजा-अङ्क	५)
गायत्री-कल्पतरु	५०)
गुरु-तन्त्र (हिन्दी टीका सहित)	१५)
गुरु-तत्त्व-दर्शन एवं गुरु-साधना	१५)
चक्र-पूजा	३०)
चक्र-पूजा के स्तोत्र	२५)
छिन्न-मस्ता नित्यार्चन	२५)
तत्त्व-विवेचन	३)
तन्त्रोक्त शब्द-ब्रह्म-साधना	४५)
तारा-कल्पतरु	३५)
दकारादि श्री दुर्गा-सहस्त्र-नाम	२०)
दश महा-विद्या-अष्टोत्तर-शत-नामावली	३०)
दश महा-विद्या-अष्टोत्तर-शत-नाम	३०)
दश महा-विद्या-कवच	३०)
दश महा-विद्या-गायत्री एवं ध्यान	३०)
दश महा-विद्या तन्त्र	६०)
दिव्य योग	१०)
दीपावली की पूजा-विधि	१५)
दीपावली विशेषाङ्क	४५)
दीक्षा-प्रकाश	३५)
दुर्गा-साधना, पुष्प-१, २	५५)
दुर्गा सप्तशती (पद्यानुवाद)	२५)
दुर्गा सप्तशती (विशुद्ध-संस्करण)	४०)
दुर्गा सप्तशती (बीजात्मक)	१०)
दुर्गा-कल्पतरु (निबन्ध व स्तोत्र-संग्रह)	१५)
दुर्गा-सहस्त्र-नाम-साधना	५)
धन-प्राप्ति के प्रयोग	१०)
धर्म-चर्चा	१०)
धर्म-मार्ग पर	३५)
ध्यान-योग एवं विचार-योग	१०)
नवरात्र-कल्पतरु	१००)
नवरात्र-पूजा-पद्धति (वैदिक)	३)
नवग्रह-साधना (सचित्र)	१००)
निष्काम योग एवं कर्म-संन्यास योग	१५)
पञ्च-मकार तथा भाव-त्रय	४०)
पारायण-विधि	१०)
प्राण-तोषिणी तन्त्र (सर्ग, धर्म-काण्ड)	५०)
बगला-कल्पतरु	१००)
बगला-साधना, पुष्प-१	६०)
बाला-स्तव-मञ्जरी	२५)
बाला-कल्पतरु	३५)
बिहार के देवी-मन्दिर	१५)

श्रीचण्डी-धाम, अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६ फोन: ०५३२-२५०२७८३, ०९४५०२२२७६७

वर्ष ७१ (१)

'कौल-कल्पतरु' चण्डी की विशेष प्रस्तुति

श्रीललिता-सहस्र-नाम

पुष्प-१

साधना-विधि
नामावली द्वारा जपादि
हिन्दी व्याख्या
प्रार्थना एवं स्तुति

*

व्याख्याकार

'कौल-कल्पतरु' श्रीश्यामानन्द नाथ

*

प्रार्थना एवं स्तुतिकार

'आशु-कवि' पं० हरिशास्त्री दाधीच

*

आदि-सम्पादक

प्रातः-स्मरणीय 'कुल-भूषण' पं० रमादत्त शुक्ल

सम्पादक

ऋतशील शर्मा

*

प्रकाशक

पण्डित देवीदत्त शुक्ल स्मारक

परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान

कल्याण मन्दिर प्रकाशन

श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग-राज-२११००६ ☎ ९४५०२२२७६७

Email : chandi_dham@rediffmail.com

अनुदान ४५/-

प्रकाशक

पण्डित देवीदत्त शुक्ल स्मारक

परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान

कल्याण मन्दिर प्रकाशन

श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग-राज-२११००६ ☎ ९४५०२२२७६७

श्रीललिता-सहस्र-नाम

भगवती त्रिपुर-सुन्दरी के तन्त्र-भेद से दस सहस्त्र-नाम हैं-

गङ्गा[१] भवानी[२] गायत्री[३], काली[४] लक्ष्मी:[५] सरस्वती[६]।
राज-राजेश्वरी[७] बाला[८], श्यामला[९] ललिता[१०] दश।।

उक्त दस सहस्त्र-नामों में श्रीललिता-सहस्त्र-नाम का महत्त्व सर्व-विदित है। इसके पाठ मात्र से कलि-युग के दोषों से मुक्ति प्राप्त होती है-

'तस्मात् संकीर्तयेन्नित्यं, कलि-दोष-निवृत्तये।'

परमेश्वरी भगवती ललिता

'सदानन्द-पूर्णा स्वात्मैव पर-देवता ललिता।'
('भावनोपनिषद्')
अर्थात् संसार की परमेश्वरी भगवती ललिता
सदा आनन्द से पूर्ण, आत्म-मय हैं।

चौथा संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण

गुप्त नवरात्र, विश्वावसु सं० २०६९ वि०-२० जून, २०१२

परा-वाणी प्रेस, अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-राज (उ०प्र०)

अनुक्रम

***

दो शब्द

'श्रीललिता-सहस्त्र-नाम' की बहुत अधिक ख्याति है। 'श्रीललिता-सहस्त्र-नाम' की लोक-प्रियता के कारण उसकी अनेक संस्कृत टीकाएँ एवं भाष्य ही नहीं हुए, अपितु अंग्रेजी एवं हिन्दी में भी उसके अनुवाद हुए। उदाहरण के लिए यहाँ आठ टीकाकारों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत है-

१. श्रीविमर्शानन्दनाथ : श्रीविमलानन्दनाथ के शिष्य। इन्होंने संस्कृत में टीका लिखी।
२. श्रीविद्यारण्य मुनीश्वर : पूज्य-पाद श्री अनन्तारण्य के शिष्य।
३. श्रीभट्टनारायण : श्रीपरशिवानन्दनाथ के शिष्य। अद्वैत-विद्या के मर्मज्ञ श्रीवेङ्कटाद्रि और उनकी पत्नी श्रीमती नारायणाम्बा के पुत्र।
४. श्रीशङ्कर : इन्होंने सामान्य टीका की।
५. श्रीभासुरानन्दनाथ : 'सौभाग्य भास्कर' नामक प्रख्यात भाष्य के प्रणेता। प्रसिद्ध लौकिक नाम श्री भास्कर राय।
६. श्रीअनन्तकृष्ण शास्त्री : इन्होंने श्रीभास्कर राय के भाष्य का अंग्रेजी-अनुवाद सन् १९२५ में किया।
७. श्रीभारतभूषण : श्रीअनन्तकृष्ण शास्त्री के अंग्रेजी अनुवाद का इन्होंने हिन्दी-रूपान्तर सन् १९८९ में प्रकाशित कराया।
८. श्रीकल्याणानन्द भारती : 'कल्याण-श्रीकला' नामक भाष्य के प्रणेता।

हिन्दी में शाक्त-साहित्य के अभाव को दूर करने का सङ्कल्प लेनेवाले 'कौल-कल्पतरु' पं० देवीदत्त शुक्ल ने जब सन् १९४२ में अपने द्वारा प्रवर्तित 'चण्डी' में श्रीललिता-सहस्त्र-नाम की विशद व्याख्या 'राष्ट्र-भाषा' हिन्दी में प्रकाशित करने का विचार किया, तब भगवती की कृपा से आपको मिथिला के उच्च कोटि के एक साधक का सहयोग मिला, जिनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है-

श्रीश्यामानन्दनाथ : लौकिक नाम श्रीइन्द्रपति सिंह। श्रीभास्करराय के भाष्य के आधार पर आपने हिन्दी में 'चण्डी' में धारावाहिक रूप से लिखा।

श्रीश्यामानन्दनाथ द्वारा लिखी उक्त व्याख्या को 'चण्डी' के मानद सम्पादक 'कुल-भूषण' पं० रमादत्त शुक्ल जी ने परिष्कृत कर पुस्तक रूप में सन् १९९० में प्रकाशित किया।

अब पुनः उक्त पुस्तक को कुछ पुष्पों में हम नवीन रूप में प्रकाशित कर रहे हैं। प्रस्तुत नवीन संस्करण में 'चण्डी' के प्रसिद्ध लेखक 'आशु-कवि' पं० हरि शास्त्री दाधीच के काव्य के आधार पर प्रार्थनाएँ एवं स्तुतियाँ भी दी जा रही हैं। इससे इसकी उपयोगिता और बढ़ जाएगी, इसमें सन्देह नहीं।

अन्त में, उल्लेखनीय है कि श्रीललिता-सहस्त्र-नाम का शुद्ध पाठ तैयार करने में गुप्तावतार बाबाश्री की हस्त-लिखित पुस्तक 'श्री-कल्पद्रुम' से बड़ी सहायता मिली है।

श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग — -ऋतशील शर्मा

***

।।श्रीललिता-त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः।।

श्रीललिता-सहस्र-नाम
(सविधि)

पूर्व-पीठिका

।।श्रीअगस्त्य उवाच।।

अश्वानन महा - बुद्धे, सर्व - शास्त्र - विशारद!।
कथितं ललिता - देव्याश्चरितं परमाद्भुतम्।।१
पूर्वं प्रादुर्भवो मातुस्ततः पट्टाभिषेचनम्।
भण्डासुर - वधश्चैव, विस्तारेण त्वयोदितः।।२
वर्णितं श्री - पुरं चापि, महा - विभव - विस्तरम्।
श्रीमत्-पञ्च-दशाक्षर्या, महिमा वर्णितस्तथा।।३
षोढा-न्यासादयो न्यासा, न्यास-खण्डे समीरिताः।।४
अन्तर्याग - क्रमश्चैव, बहिर्याग - क्रमस्तथा।
महा-याग - क्रमश्चैव, पूजा - खण्डे प्रकीर्तिताः।।५
पुरश्चरण - खण्डे तु, जप - लक्षणमीरितम्।
होम-खण्डे त्वया प्रोक्तो, होम-द्रव्य-विधि-क्रमः।।६
चक्र - राजस्य विद्यायाः, श्रीदेव्या देशिकात्मनोः।
रहस्य - खण्डे तादात्म्यं, परस्परमुदीरितम्।
स्तोत्र-खण्डे बहु-विधाः, स्तुतयः परि-कीर्तिताः।।७
मन्त्रिणी-दण्डिनी-देव्योः, प्रोक्ते नाम-सहस्रके।
न तु श्रीललिता-देव्याः, प्रोक्तं नाम-सहस्रकम्।।८
तत्र मे संशयो जातो, हयग्रीव दया - निधे!।
किं वा त्वया विस्मृतं तज्ज्ञात्वा वा समुपेक्षितम्।।९

मम वा योग्यता नास्ति, श्रोतुं नाम-सहस्त्रकम्।
किमर्थं भवता नोक्तं, तत्र मे कारणं वद।।१०

।।श्रीसूत उवाच।।

इति पृष्टो हय - ग्रीवो, मुनिना कुम्भ - जन्मना।
प्रहृष्टो वचनं प्राह, तापसं कुम्भ - सम्भवम्।।११

।।श्रीहयग्रीव उवाच।।

लोपा-मुद्रा-पतेऽगस्त्य!, सावधान-मनाः शृणु।
नाम्नां सहस्त्रं यन्नोक्तं, कारणं तद् वदामि ते।।१२
रहस्यमिति मत्वाऽहं, नोक्त-वांस्ते न चान्यथा।
पुनश्च पृच्छते भक्त्या, तस्मात् तत् ते वदाम्यहम् ।।१३
ब्रूयाच्छिष्याय भक्ताय, रहस्यमपि देशिकः।
भवता न प्रदेयं स्यादभक्ताय कदाचन।।१४
न शठाय न दुष्टाय, नाविश्वासाय कर्हि-चित्।
श्रीमातृ-भक्ति-युक्ताय, श्रीविद्या-राज-वेदिने।।१५
उपासकाय शुद्धाय, देयं नाम - सहस्त्रकम्।
यानि नाम - सहस्त्राणि, सद्यः सिद्धि - प्रदानि वै।।१६
तन्त्रेषु ललिता - देव्यास्तेषु मुख्यमिदं मुने!।
श्रीविद्यैव तु मन्त्राणां, तत्र कादिर्यथा परा।।१७
पुराणां श्रीपुरमिव, शक्तीनां ललिता यथा।
श्रीविद्योपासकानां च, यथा देवो वरः शिवः।।१८
तथा नाम - सहस्त्रेषु, वरमेतत् प्रकीर्तितम्।
यथाऽस्य पठनाद् देवी, प्रीयते ललिताऽम्बिका।।१९
अन्य - नाम - सहस्त्रस्य, पाठान्न प्रीयते तथा।
श्रीमातुः प्रीतये तस्मादनिशं कीर्तयेदिदम्।।२०
बिल्व-पत्रैश्चक्र-राजे, योऽर्चयेल्ललिताऽम्बिकाम्।
पद्मैर्वा तुलसी - पुष्पैरेभिर्नाम - सहस्त्रकैः।।२१

सद्यः प्रसादं कुरुते, तत्र सिंहासनेश्वरी।
चक्राधि - राजमभ्यर्च्य, जप्त्वा पञ्च-दशाक्षरीम्।।२२
जपान्ते कीर्तयेन्नित्यमिदं नाम - सहस्त्रकम्।
जप - पूजाद्यशक्तोऽपि, पठेन्नाम - सहस्त्रकम्।।२३
साङ्गार्चने साङ्ग - जपे, यत्-फलं तदवाप्नुयात्।
उपासने स्तुतीरन्याः, पठेदभ्युदयो हि सः।।२४
इदं नाम - सहस्त्रं तु, कीर्तयेन्नित्य-कर्म-वत्।
चक्र - राजार्चनं देव्या, जपो नाम्नां च कीर्तनम्।।२५
भक्तस्य कृत्यमेतावदन्यदभ्युदयं विदुः।
भक्तास्यवश्यकमिदं, नाम - साहस्त्र-कीर्तनम्।।२६
तत्र हेतुं प्रवक्ष्यामि, शृणु त्वं कुम्भ - सम्भव!।
पुरा श्रीललिता - देवी, भक्तानां हित-काम्यया।
वाग् - देवीर्वशिनी-मुख्याः, समाहूयेदमब्रवीत्।।२७

।।श्रीदेव्युवाच।।

"वाग् -देवता वशिन्याद्याः, शृणुध्वं वचनं मम।।२८
भवत्यो मत्-प्रसादेन, प्रोल्लसद्-वाग्-विभूतयः।
मद् - भक्तानां वाग् - विभूति-प्रदाने विनियोजिताः।।२९
मच्चक्रस्य रहस्यज्ञा, मम नाम - परायणाः।
मम स्तोत्र - विधानाय, तस्मादाज्ञापयामि वः।।३०
कुरुध्वमङ्कितं स्तोत्रं, मम नाम - सहस्त्रकैः।
येन भक्तैः स्तुताया मे, सद्यः प्रीतिः परा भवेत्"।।३१

।।श्रीहयग्रीव उवाच।।

इत्याज्ञप्ता वचो देव्यः, देव्या श्रीललिताऽम्बया।
रहस्यैर्नामभिर्दिव्यैश्चक्रुः स्तोत्रमनुत्तमम्।।३२

रहस्य - नाम - साहस्त्रमिति तद् विश्रुतं परम्।
ततः कदाचित् सदसि, स्थित्वा सिंहासनेऽम्बिका।।३३
स्व-सेवाऽवसरं प्रादात्, सर्वेषां कुम्भ - सम्भव!।
सेवार्थमागतास्तत्र, ब्रह्माणी - ब्रह्म - कोटयः।।३४
लक्ष्मी - नारायणानां च, कोटयः समुपागताः।
गौरी - कोटि - समेतानां, रुद्राणामपि कोटयः।।३५
मन्त्रिणी-दण्डिनी-मुख्याः, सेवार्थं याः समागताः।
शक्तयो विविधाकारास्तासां संख्या न विद्यते।।३६
दिव्यौघा मानवौघाश्च, सिद्धौघाश्च समागताः।
तत्र श्रीललिता - देवी, सर्वेषां दर्शनं ददौ।।३७
तेषु दृष्ट्वोपविष्टेषु, स्वे स्वे स्थाने यथा-क्रमम्।
तत्र श्रीललिता - देवी - कटाक्षाक्षेपनोदिताः।।३८
उत्थाय वशिनी - मुख्या, बद्धाञ्जलि-पुटास्तदा।
अस्तुवन् नाम-साहस्त्रैः, स्व-कृतैर्ललिताऽम्बिकाम्।।३९
श्रुत्वा स्तवं प्रसन्नाऽभूल्ललिता परमेश्वरी।
सर्वे ते विस्मयं जग्मुर्ये तत्र सदसि स्थिताः।।४०
ततः प्रोवाच ललिता, सदस्यान् देवता - गणान्।

।।श्रीदेव्युवाच।।

''ममाज्ञयैव वाग् - देव्यश्चक्रुः स्तोत्रमनुत्तमम्।।४१
अङ्कितं नामभिर्दिव्यैर्मम प्रीति - विधायकैः।
तत् पठध्वं सदा यूयं, स्तोत्रं मत् - प्रीति-वृद्धये।।४२
प्रवर्तयध्वं भक्तेषु, मम नाम - सहस्त्रकम्।
इदं नाम - सहस्त्रं मे, यो भक्तः पठते सकृत्।।४३

मम प्रिय - तमो ज्ञेयस्तस्मै कामान् ददाम्यहम्।
श्रीचक्रे मां समभ्यर्च्य, जप्त्वा पञ्च-दशाक्षरीम्।।४४
पश्चान्नाम - सहस्रं मे, कीर्तयेन्मम तुष्टये।
मामर्चयतु वा मा वा, विद्यां जपतु वा न वा।।४५
कीर्तयेन्नाम - साहस्रमिदं मत् - प्रीतये सदा।
मत्-प्रीत्या सकलान् कामाँल्लभते नात्र संशयः।।४६
तस्मान्नाम-साहस्रं मे, कीर्तयध्वं सदाऽऽदरात्''।

।।श्रीहयग्रीव उवाच।।

इति श्रीललितेशानी, शास्ति देवान् सहानुगान्।।४७
तदाज्ञया तदारभ्य, ब्रह्म - विष्णु - महेश्वराः।
शक्तयो मन्त्रिणी - मुख्या, इदं नाम - सहस्रकम्।।४८
पठन्ति भक्त्या सततं, ललिता - परितुष्टये।
तस्मादवश्यं भक्तेन, कीर्तनीयमिदं मुने!।।४९
आवश्यकत्वे हेतुस्ते, मया प्रोक्तो मुनीश्वर!।
इदानीं नाम - साहस्रं, वक्ष्यामि श्रद्धया शृणु।।५०

मूल-पाठ

।।विनियोगः।।

ॐ अस्य श्रीललिता-सहस्र-नाम-स्तोत्र-माला-मन्त्रस्य श्रीवशिन्यादि-वाग्-देवता ऋषयः। अनुष्टुप् छन्दः। श्रीललिताऽम्बा देवता। कएईलह्रीं बीजम्। सकलह्रीं शक्तिः। हसकहलह्रीं कीलकम्। श्रीललिताऽम्बा-प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

।।ऋष्यादि-न्यास।।

श्रीवशिन्यादि-वाग्-देवता-ऋषिभ्यो नमः शिरसि। अनुष्टुप्-छन्दसे नमः मुखे। श्रीललिताऽम्बा देवतायै नमः हृदि। कएईलह्रीं-बीजाय नमः गुह्ये। सकलह्रीं-शक्तये नमः पादयोः। हसकहलह्रीं-कीलकाय नमः सर्वाङ्गे। श्रीललिताऽम्बा-प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यास	अङ्ग-न्यास
ऐं कएईलह्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
क्लीं हसकहलह्रीं	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
सौः सकलह्रीं	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ऐं कएईलह्रीं	अनामाभ्यां नमः	कवचाय हुम्
क्लीं हसकहलह्रीं	कनिष्ठाभ्यां नमः	नेत्र-त्रयाय वौषट्
सौः सकलह्रीं	करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

।।ध्यानम्।।

सिन्दूरारुण-विग्रहां त्रि-नयनां माणिक्य-मौलि-स्फुरत्-
तारा-नायक-शेखरां स्मित-मुखीमापीन-वक्षो-रुहाम्।
पाणिभ्यामलि-पूर्ण-रत्न-चषकं रक्तोत्पलं बिभ्रतीम्,
सौम्यां रत्न-घटस्थ-रक्त-चरणां ध्याये परामम्बिकाम्।।

।।मानस पूजन।।

ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीललिताम्बा-प्रीतये समर्पयामि नमः (अधो-मुख कनिष्ठा-अंगुष्ठ)।
ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीललिताम्बा-प्रीतये समर्पयामि नमः (अधो-मुख तर्जनी-अंगुष्ठ)।
ॐ यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीललिताम्बा-प्रीतये घ्रापयामि नमः (ऊर्ध्व-मुख तर्जनी-अंगुष्ठ)।
ॐ रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीललिताम्बा-प्रीतये दर्शयामि नमः (ऊर्ध्व-मुख मध्यमा-अंगुष्ठ)।
ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीललिताम्बा-प्रीतये निवेदयामि नमः (ऊर्ध्व-मुख अनामा-अंगुष्ठ)।
ॐ सं सर्वात्मकं ताम्बूलं श्रीललिताम्बा-प्रीतये समर्पयामि नमः (ऊर्ध्व-मुख सर्वांगुलि)।

।।श्रीहयग्रीव उवाच।।

ॐ श्रीमाता[१] श्रीमहा - राज्ञी[२], श्रीमत्-सिंहासनेश्वरी[३]।
चिदग्नि - कुण्ड - सम्भूता[४], देव - कार्य - समुद्यता[५]।।१
उद्यद् - भानु - सहस्त्राभा[६], चतुर्बाहु - समन्विता[७]।
राग - स्वरूप - पाशाढ्या[८], क्रोधाकारांकुशोज्ज्वला[९]।।२
मनो - रूपेक्षु - कोदण्डा[१०], पञ्च - तन्मात्र - सायका[११]।
निजारुण - प्रभा - पूर - मज्जद् - ब्रह्माण्ड - मण्डला[१२]।।३

चम्पकाशोक - पुन्नाग - सौगन्धिक - लसत् - कचा[१३]।
कुरुविन्द - मणि - श्रेणी - कनत् - कोटीर - मण्डिता[१४]।।०४
अष्टमी - चन्द्र - विभ्राजदलिक - स्थल - शोभिता[१५]।
मुख - चन्द्र - कलङ्काभ - मृग - नाभि - विशेषका[१६]।।०५
वदन - स्मर - माङ्गल्य - गृह - तोरण - चिल्लिका[१७]।
वक्त्र - लक्ष्मी - परीवाह - चलन्मीनाभ - लोचना[१८]।।०६
नव - चम्पक - पुष्पाभ - नासा - दण्ड - विराजिता[१९]।
तारा - कान्ति - तिरस्कारि - नासाऽऽभरण - भासुरा[२०]।।०७
कदम्ब - मञ्जरी - क्लृप्त - कर्णपूर - मनोहरा[२१]।
ताटङ्क - युगली - भूत - तपनोडुप - मण्डला[२२]।।०८
पद्म - राग - शिलाऽऽदर्श - परिभावि - कपोल - भूः[२३]।
नव - विद्रुम - बिम्ब - श्रीन्यक्कारि - दशनच्छदा[२४]।।०९
शुद्ध - विद्यांकुराकार - द्विज - पंक्ति - द्वयोज्ज्वला[२५]।
कर्पूर - वीटिकाऽऽमोद - समाकर्षि - दिगन्तरा[२६]।।१०
निज - संल्लाप - माधुर्य - विनिर्भर्त्सित - कच्छपी[२७]।
मन्द - स्मित - प्रभा - पूर - मज्जत् - कामेश - मानसा[२८]।।११
अनाकलित - सादृश्य - चिबुक - श्री - विराजिता[२९]।
कामेश - बद्ध - माङ्गल्य - सूत्र - शोभित - कन्धरा[३०]।।१२
कनकाङ्गद - केयूर - कमनीय - भुजान्विता[३१]।
रत्न - ग्रैवेय - चिन्ताक - लोल - मुक्ता - फलान्विता[३२]।।१३
कामेश्वर - प्रेम - रत्न - मणि - प्रति - पण - स्तनी[३३]।
नाभ्याल - वाल - रोमालि - लता - फल - कुच - द्वयी[३४]।।१४
लक्ष्य - रोम - लताधारता - समुन्नेय - मध्यमा[३५]।
स्तन - भार - दलन्मध्य - पट्ट - बन्ध - वलि - त्रया[३६]।।१५

अरुणारुण - कौसुम्भ - वस्त्र - भास्वत् - कटी - तटी[37]।
रत्न - किङ्किणिका - रम्य - रशना - दाम - भूषिता[38]।।१६
कामेश - ज्ञात - सौभाग्यमार्दवोरु - द्वयान्विता[39]।
माणिक्य - मुकुटाकार - जानु - द्वय - विराजिता[40]।।१७
इन्द्र - गोप - परिक्षिप्त - स्मर - तूणाभ - जङ्घिका[41]।
गूढ - गुल्फा[42] कूर्म - पृष्ठ - जयिष्णु - प्रपदान्विता[43]।।१८
नख - दीधिति - सञ्छन्न - नमज्जन - तमो - गुणा[44]।
पद - द्वय - प्रभा - जाल - परा - कृत - सरोरुहा[45]।।१९
शिञ्जान - मणि - मञ्जीर - मण्डित - श्री - पदाम्बुजा[46]।
मराली - मन्द - गमना[47], महा - लावण्य - शेवधिः[48]।।२०
सर्वारुणाऽनवद्याङ्गी[49-50], सर्वाभरण - भूषिता[51]।
शिव - कामेश्वराङ्कस्था[52], शिवा[53] स्वाधीन - वल्लभा[54]।।२१
सुमेरु - शृङ्ग - मध्यस्था[55], श्रीमन्नगर - नायिका[56]।
चिन्ता - मणि - गृहान्तःस्था[57], पञ्च-ब्रह्मासन-स्थिता[58]।।२२
महा - पद्माटवी - संस्था[59], कदम्ब - वन - वासिनी[60]।
सुधा - सागर - मध्यस्था[61], कामाक्षी[62] काम - दायिनी[63]।।२३
देवर्षि - गण - सङ्घात - स्तूय - मानात्म - वैभवा[64]।
भण्डासुर - वधोद्युक्त - शक्ति - सेना - समन्विता[65]।।२४
सम्पत् - करी - समारूढ - सिन्धुर - व्रज - सेविता[66]।
अश्वारूढाऽधिष्ठिताश्व - कोटि - कोटभिरावृता[67]।।२५
चक्र - राज - रथारूढ - सर्वायुध - परिष्कृता[68]।
गेय - चक्र - रथारूढ - मन्त्रिणी - परि - सेविता[69]।।२६
किरि - चक्र - रथारूढ - दण्ड - नाथा - पुरस्कृता[70]।
ज्वाला - मालिनिका - क्षिप्त - वह्नि - प्राकार - मध्यगा[71]।।२७

भण्ड - सैन्य - वधोद्युक्त - शक्ति - विक्रम - हर्षिता[७२]।
नित्या - पराक्रमाऽऽटोप - निरीक्षण - समुत्सुका[७३]।।२८
भण्ड - पुत्र - वधोद्युक्त - बाला - विक्रम - नन्दिता[७४]।
मन्त्रिण्यम्बा - विरचित - विशुक्र - वध - तोषिता[७५]।।२९
विषङ्ग - प्राण - हरण - वाराही - वीर्य - नन्दिता[७६]।
कामेश्वर - मुखालोक - कल्पित - श्रीगणेश्वरा[७७]।।३०
महा - गणेश - निर्भिन्न - विघ्न - यन्त्र - प्रहर्षिता[७८]।
भण्डासुरेन्द्र - निर्मुक्त - शस्त्र - प्रत्यस्त्र - वर्षिणी[७९]।।३१
करांगुलि - नखोत्पन्न - नारायण - दशाकृतिः[८०]।
महा - पाशुपतास्त्राग्नि - निर्दग्धासुर - सैनिका[८१]।।३२
कामेश्वरास्त्र - निर्दग्ध - स - भण्डासुर - शून्यका[८२]।
ब्रह्मोपेन्द्र - महेन्द्रादि - देव - संस्तुत - वैभवा[८३]।।३३
हर - नेत्राग्नि - सन्दग्ध - काम - सञ्जीवनौषधिः[८४]।
श्रीमद् - वाग्भव - कूटैक - स्वरूप - मुख - पङ्कजा[८५]।।३४
कण्ठाधः - कटि - पर्यन्त - मध्य - कूट - स्वरूपिणी[८६]।
शक्ति - कूटैकताऽऽपन्न - कट्यधो - भाग - धारिणी[८७]।।३५
मूल - मन्त्रात्मिका[८८] मूल - कूट - त्रय - कलेवरा[८९]।
कुलामृतैक - रसिका[९०], कुल - सङ्केत - पालिनी[९१]।।३६
कुलाङ्गना[९२] कुलान्तःस्था[९३], कौलिनी[९४] कुल-योगिनी[९५]।
अकुला[९६] समयान्तःस्था[९७], समयाचार - तत्परा[९८]।।३७
मूलाधारैक - निलया[९९], ब्रह्म - ग्रन्थि - विभेदिनी[१००]।
मणिपूरान्तरुदिता[१०१], विष्णु - ग्रन्थि - विभेदिनी[१०२]।।३८

आज्ञा-चक्रान्तरालस्था[१०३], रुद्र-ग्रन्थि-विभेदिनी[१०४]।
सहस्राराम्बुजारूढा[१०५], सुधा - साराभि - वर्षिणी[१०६]।।३९
तडिल्लता-सम-रुचिः[१०७], षट्-चक्रोपरि-संस्थिता[१०८]।
महा-शक्तिः[१०९] कुण्डलिनी[११०], विस-तन्तु-तनीयसी[१११]।।४०
भवानी[११२] भावना-गम्या[११३], भवारण्य-कुठारिका[११४]।
भद्र-प्रिया[११५] भद्र-मूर्तिः[११६], भक्त-सौभाग्य-दायिनी[११७]।।४१
भक्ति-प्रिया[११८] भक्ति-गम्या[११९], भक्ति-वश्या[१२०] भयापहा[१२१]।
शाम्भवी[१२२] शारदाऽऽराध्या[१२३], शर्वाणी[१२४] शर्म-दायिनी[१२५]।।४२
शाङ्करी[१२६] श्री-करी[१२७] साध्वी[१२८], शरच्चन्द्र-निभानना[१२९]।
शातोदरी[१३०] शान्ति-मती[१३१], निराधारा[१३२] निरञ्जना[१३३]।।४३
निर्लेपा[१३४] निर्मला[१३५] नित्या[१३६], निराकारा[१३७] निराकुला[१३८]।
निर्गुणा[१३९] निष्कला[१४०] शान्ता[१४१], निष्कामा[१४२] निरुपप्लवा[१४३]।।४४
नित्य-मुक्ता[१४४] निर्विकारा[१४५], निष्प्रपञ्चा[१४६] निराश्रया[१४७]।
नित्य-शुद्धा[१४८] नित्य-बुद्धा[१४९], निरवद्या[१५०] निरन्तरा[१५१]।।४५
निष्कारणा[१५२] निष्कलङ्का[१५३], निरुपाधिः[१५४] निरीश्वरा[१५५]।
नीरागा[१५६] राग-मथिनी[१५७], निर्मदा[१५८] मद-नाशिनी[१५९]।।४६
निश्चिन्ता[१६०] निरहङ्कारा[१६१], निर्मोहा[१६२] मोह-नाशिनी[१६३]।
निर्ममा[१६४] ममता-हन्त्री[१६५], निष्पापा[१६६] पाप-नाशिनी[१६७]।।४७
निष्क्रोधा[१६८] क्रोध-शमिनी[१६९], निर्लोभा[१७०] लोभ-नाशिनी[१७१]।
निःसंशया[१७२] संशयघ्नी[१७३], निर्भवा[१७४] भव-नाशिनी[१७५]।।४८
निर्विकल्पा[१७६] निराबाधा[१७७], निर्भेदा[१७८] भेद-नाशिनी[१७९]।
निर्नाशा[१८०] मृत्यु-मथिनी[१८१], निष्क्रिया[१८२] निष्परिग्रहा[१८३]।।४९
निस्तुला[१८४] नील-चिकुरा[१८५], निरपाया[१८६] निरत्यया[१८७]।
दुर्लभा[१८८] दुर्गमा[१८९] दुर्गा[१९०], दुःख-हन्त्री[१९१] सुख-प्रदा[१९२]।।५०

दुष्ट - दूरा[११३] दुराचार - शमनी[११४] दोष - वर्जिता[११५]।
सर्वज्ञा[११६] सान्द्र - करुणा[११७], समानाधिक - वर्जिता[११८]।।५१
सर्व-शक्ति-मयी[११९] सर्व-मङ्गला[२००] सद्-गति-प्रदा[२०१]।
सर्वेश्वरी[२०२] सर्व - मयी[२०३], सर्व-मन्त्र-स्वरूपिणी[२०४]।।५२
सर्व-यन्त्रात्मिका[२०५] सर्व-तन्त्र-रूपा[२०६] मनोन्मनी[२०७]।
माहेश्वरी[२०८] महा-देवी[२०९], महा-लक्ष्मीः[२१०] मृड-प्रिया[२११]।।५३
महा-रूपा[२१२] महा-पूज्या[२१३], महा-पातक-नाशिनी[२१४]।
महा-माया[२१५] महा-सत्त्वा[२१६], महा-शक्तिः[२१७] महा-रतिः[२१८]।।५४
महा-भोगा[२१९] महैश्वर्या[२२०], महा-वीर्या[२२१] महा-बला[२२२]।
महा-बुद्धिः[२२३] महा-सिद्धिः[२२४], महा-योगेश्वरेश्वरी[२२५]।।५५
महा-तन्त्रा[२२६] महा-मन्त्रा[२२७], महा-यन्त्रा[२२८] महाऽऽसना[२२९]।
महा - याग - क्रमाराध्या[२३०], महा-भैरव-पूजिता[२३१]।।५६
महेश्वर - महा - कल्प - महा - ताण्डव-साक्षिणी[२३२]।
महा - कामेश - महिषी[२३३], महा -त्रिपुर - सुन्दरी[२३४]।।५७
चतुः-षष्ट्युपचाराढ्या[२३५], चतुः-षष्टि-कला-मयी[२३६]।
महा-चतुः-षष्टि-कोटि - योगिनी - गण-सेविता[२३७]।।५८
मनु-विद्या[२३८] चन्द्र-विद्या[२३९], चन्द्र - मण्डल-मध्यगा[२४०]।
चारु-रूपा[२४१] चारु-हासा[२४२], चारु-चन्द्र-कला-धरा[२४३]।।५९
चराचर - जगन्नाथा[२४४], चक्र - राज - निकेतना[२४५]।
पार्वती[२४६] पद्म - नयना[२४७], पद्म - राग - सम - प्रभा[२४८]।।६०
पञ्च - प्रेतासनासीना[२४९], पञ्च - ब्रह्म - स्वरूपिणी[२५०]।
चिन्मयी[२५१] परमानन्दा[२५२], विज्ञान - घन - रूपिणी[२५३]।।६१

ध्यान - ध्यातृ-ध्येय-रूपा[२५४], धर्माधर्म - विवर्जिता[२५५]।
विश्व-रूपा[२५६] जागरिणी[२५७], स्वपन्ती[२५८] तैजसात्मिका[२५९]।।६२
सुप्ता[२६०] प्राज्ञात्मिका[२६१] तुर्या[२६२], सर्वावस्था-विवर्जिता[२६३]।
सृष्टि-कर्त्री[२६४] ब्रह्म-रूपा[२६५], गोप्त्री[२६६] गोविन्द-रूपिणी[२६७]।।६३
संहारिणी[२६८] रुद्र-रूपा[२६९], तिरोधान - करीश्वरी[२७०-७१]।
सदा-शिवाऽनुग्रहदा[२७२-७३], पञ्च - कृत्य - परायणा[२७४]।।६४
भानु-मण्डल-मध्यस्था[२७५], भैरवी[२७६] भग-मालिनी[२७७]।
पद्मासना[२७८] भगवती[२७९], पद्म - नाभ - सहोदरी[२८०]।।६५
उन्मेष - निमेषोत्पन्न - विपन्न - भुवनावली[२८१]।
सहस्र - शीर्ष - वदना[२८२], सहस्राक्षी[२८३] सहस्र-पात्[२८४]।।६६
आब्रह्म - कीट - जननी[२८५], वर्णाश्रम - विधायिनी[२८६]।
निजाज्ञा - रूप - निगमा[२८७], पुण्यापुण्य - फल - प्रदा[२८८]।।६७
श्रुति - सीमन्त - सिन्दूरी - कृत - पादाब्ज - धूलिका[२८९]।
सकलागम - सन्दोह - शुक्ति - सम्पुट - मौक्तिका[२९०]।।६८
पुरुषार्थ - प्रदा[२९१] पूर्णा[२९२], भोगिनी[२९३] भुवनेश्वरी[२९४]।
अम्बिकाऽनादि - निधना[२९५-९६], हरि-ब्रह्मेन्द्र-सेविता[२९७]।।६९
नारायणी[२९८] नाद-रूपा[२९९], नाम-रूप-विवर्जिता[३००]।
ह्रीङ्कारी[३०१] ह्रीमती[३०२] हृद्या[३०३], हेयोपादेय-वर्जिता[३०४]।।७०
राज-राजार्चिता[३०५] राज्ञी[३०६], रम्या[३०७] राजीव-लोचना[३०८]।
रञ्जनी[३०९] रमणी[३१०] रस्या[३११], रणत्-किङ्किणि-मेखला[३१२]।।७१
रमा[३१३] राकेन्दु-वदना[३१४], रति-रूपा[३१५] रति-प्रिया[३१६]।
रक्षा-करी[३१७] राक्षसघ्नी[३१८], रामा[३१९] रमण-लम्पटा[३२०]।।७२

काम्या[३२१] काम-कला-रूपा[३२२], कदम्ब-कुसुम-प्रिया[३२३]।
कल्याणी[३२४] जगती-कन्दा[३२५], करुणा-रस-सागरा[३२६]।।७३
कला-वती[३२७] कलाऽऽलापा[३२८], कान्ता[३२९] कादम्बरी-प्रिया[३३०]।
वरदा[३३१] वाम - नयना[३३२], वारुणी-मद-विह्वला[३३३]।।७४
विश्वाधिका[३३४] वेद-वेद्या[३३५], विन्ध्याचल-निवासिनी[३३६]।
विधात्री[३३७] वेद-जननी[३३८], विष्णु-माया[३३९] विलासिनी[३४०]।।७५
क्षेत्र-स्वरूपा[३४१] क्षेत्रेशी[३४२], क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ - पालिनी[३४३]।
क्षय - वृद्धि - विनिर्मुक्ता[३४४], क्षेत्रपाल - समर्चिता[३४५]।।७६
विजया[३४६] विमला[३४७] वन्द्या[३४८], वन्दारु-जन-वत्सला[३४९]।
वाग्-वादिनी[३५०] वाम-केशी[३५१], वह्नि-मण्डल-वासिनी[३५२]।।७७
भक्ति-मत्-कल्प-लतिका[३५३], पशु-पाश-विमोचिनी[३५४]।
संहृताशेष - पाखण्डा[३५५], सदाचार - प्रवर्तिका[३५६]।।७८
ताप - त्रयाग्नि - सन्तप्त - समाह्लादन - चन्द्रिका[३५७]।
तरुणी[३५८] तापसाराध्या[३५९], तनु-मध्या[३६०] तमोऽपहा[३६१]।।७९
चितिः[३६२] तत्-पद-लक्ष्यार्था[३६३], चिदेक-रस-रूपिणी[३६४]।
स्वात्मानन्द - लवी - भूत - ब्रह्माद्यानन्द - सन्ततिः[३६५]।।८०
परा[३६६] प्रत्यक्-चिती-रूपा[३६७], पश्यन्ती[३६८] पर-देवता[३६९]।
मध्यमा[३७०] वैखरी-रूपा[३७१], भक्त-मानस-हंसिका[३७२]।।८१
कामेश्वर-प्राण-नाडी[३७३], कृतज्ञा[३७४] काम-पूजिता[३७५]।
शृङ्गार-रस-सम्पूर्णा[३७६], जया[३७७] जालन्धर-स्थिता[३७८]।।८२
ओड्याण-पीठ-निलया[३७९], बिन्दु-मण्डल-वासिनी[३८०]।
रहो - याग - क्रमाराध्या[३८१], रहस्तर्पण - तर्पिता[३८२]।।८३
सद्यः-प्रसादिनी[३८३] विश्व-साक्षिणी[३८४] साक्षि-वर्जिता[३८५]।
षडङ्ग - देवता - युक्ता[३८६], षाड् - गुण्य - परि - पूरिता[३८७]।।८४

नित्य-क्लिन्ना[३८८] निरुपमा[३८९], निर्वाण-सुख-दायिनी[३९०]।
नित्या-षोडशिका-रूपा[३९१], श्रीकण्ठार्ध-शरीरिणी[३९२]।।८५
प्रभा-वती[३९३] प्रभा-रूपा[३९४], प्रसिद्धा[३९५] परमेश्वरी[३९६]।
मूल-प्रकृतिरव्यक्ता[३९७-९८], व्यक्ताव्यक्त-स्वरूपिणी[३९९]।।८६
व्यापिनी[४००] विविधाकारा[४०१], विद्याऽविद्या-स्वरूपिणी[४०२]।
महा - कामेश - नयन - कुमुदाह्लाद - कौमुदी[४०३]।।८७
भक्त- हार्द - तमो - भेद - भानु - मद् -भानु-सन्तति:[४०४]।
शिव-दूती[४०५] शिवाराध्या[४०६], शिव-मूर्ति:[४०७] शिवङ्करी[४०८]।।८८
शिव-प्रिया[४०९] शिव-परा[४१०], शिष्टेष्टा[४११] शिष्ट-पूजिता[४१२]।
अप्रमेया[४१३] स्व - प्रकाशा[४१४], मनो - वाचामगोचरा[४१५]।।८९
चिच्छक्तिश्चेतना-रूपा[४१६-१७], जड-शक्ति:[४१८] जडात्मिका[४१९]।
गायत्री[४२०] व्याहृति:[४२१] सन्ध्या[४२२], द्विज-वृन्द-निषेविता[४२३]।।९०
तत्त्वासना[४२४] तत्त्व-मयी[४२५-२७], पञ्च-कोशान्तर-स्थिता[४२८]।
नि:सीम-महिमा[४२९] नित्य-यौवना[४३०] मद-शालिनी[४३१]।।९१
मद - घूर्णित - रक्ताक्षी[४३२], मद - पाटल-गण्ड-भू:[४३३]।
चन्दन-द्रव-दिग्धाङ्गी[४३४], चाम्पेय - कुसुम - प्रिया[४३५]।।९२
कुशला[४३६] कोमलाऽऽकारा[४३७], कुरु-कुल्ला[४३८] कुलेश्वरी[४३९]।
कुल - कुण्डालया[४४०] कौल - मार्ग - तत्पर - सेविता[४४१]।।९३
कुमार-गण-नाथाम्बा[४४२], तुष्टि:[४४३] पुष्टिर्मतिर्धृति:[४४४-४६]।
शान्ति:[४४७] स्वस्ति-मती[४४८], कान्ति:[४४९] नन्दिनी[४५०] विघ्न-नाशिनी[४५१]।।९४
तेजो-वती[४५२] त्रि-नयना[४५३], लोलाक्षी-काम-रूपिणी[४५४]।
मालिनी[४५५] हंसिनी[४५६] माता[४५७], मलयाचल-वासिनी[४५८]।।९५

सुमुखी[४५९] नलिनी[४६०] सुभ्रूः[४६१], शोभना[४६२] सुर-नायिका[४६३]।
काल-कण्ठी[४६४] कान्ति-मती[४६५], क्षोभिणी[४६६] सूक्ष्म-रूपिणी[४६७]।।९६
वज्रेश्वरी[४६८] वाम-देवी[४६९], वयोऽवस्था - विवर्जिता[४७०]।
सिद्धेश्वरी[४७१] सिद्ध-विद्या[४७२], सिद्ध-माता[४७३] यशस्विनी[४७४]।।९७
विशुद्धि-चक्र-निलयाऽऽरक्त-वर्णा[४७५-७६] त्रि-लोचना[४७७]।
खट्वाङ्गादि - प्रहरणा[४७८], वदनैक - समन्विता[४७९]।।९८
पायसान्न-प्रिया[४८०] त्वक्-स्था[४८१], पशु-लोक-भयङ्करी[४८२]।
अमृतादि - महा - शक्ति - संवृता[४८३] डाकिनीश्वरी[४८४]।।९९
अनाहताब्ज - निलया[४८५], श्यामाभा[४८६] वदन - द्वया[४८७]।
दंष्ट्रोज्ज्वलाक्ष-मालादि-धरा[४८८-८९] रुधिर-संस्थिता[४९०]।।१००
काल-रात्र्यादि-शक्त्यौघ-वृता[४९१] स्निग्धौदन-प्रिया[४९२]।
महा - वीरेन्द्र - वरदा[४९३], राकिण्यम्बा - स्वरूपिणी[४९४]।।१०१
मणि - पूराब्ज - निलया[४९५], वदन - त्रय - संयुता[४९६]।
वज्रादिकायुधोपेता[४९७], डामर्यादिभिरावृता[४९८]।।१०२
रक्त-वर्णा[४९९] मांस-निष्ठा[५००], गुडान्न-प्रीत-मानसा[५०१]।
समस्त - भक्त - सुखदा[५०२], लाकिन्यम्बा - स्वरूपिणी[५०३]।।१०३
स्वाधिष्ठानाम्बुज - गता[५०४], चतुर्वक्त्र - मनोहरा[५०५]।
शूलाद्यायुध - सम्पन्ना[५०६], पीत - वर्णाऽति - गर्विता[५०७-८]।।१०४
मेदो-निष्ठा[५०९] मधु-प्रीता[५१०], बन्धिन्यादि-समन्विता[५११]।
दध्यन्नासक्त - हृदया[५१२], काकिनी-रूप - धारिणी[५१३]।।१०५
मूलाधाराम्बुजारूढा[५१४], पञ्च-वक्त्राऽस्थि-संस्थिता[५१५-१६]।
अंकुशादि - प्रहरणा[५१७], वरदादि - निषेविता[५१८]।।१०६

मुद्गौदनासक्त-चित्ता[५१९], साकिन्यम्बा-स्वरूपिणी[५२०]।
आज्ञा-चक्राब्ज-निलया[५२१], शुक्ल-वर्णा[५२२] षडानना[५२३]।।१०७
मज्जा - संस्था[५२४] हंस-वती - मुख्य - शक्ति - समन्विता[५२५]।
हरिद्रान्नैक - रसिका[५२६], हाकिनी - रूप - धारिणी[५२७]।।१०८
सहस्त्र- दल - पद्मस्था[५२८], सर्व - वर्णोपशोभिता[५२९]।
सर्वायुध - धरा[५३०] शुक्र - संस्थिता[५३१] सर्वतोमुखी[५३२]।।१०९
सर्वौदन - प्रीत - चित्ता[५३३], याकिन्यम्बा-स्वरूपिणी[५३४]।
स्वाहा[५३५] स्वधा[५३६] मतिः[५३७] मेधा[५३८], श्रुति-स्मृतिरनुत्तमा[५३९-४१]।।११०
पुण्य-कीर्तिः[५४२] पुण्य-लभ्या[५४३], पुण्य-श्रवण-कीर्तना[५४४]।
पुलोमजाऽर्चिता[५४५] बन्ध - मोचिनी[५४६] बन्धुरालका[५४७]।।१११
विमर्श-रूपिणी[५४८] विद्या[५४९], वियदादि-जगत्-प्रसूः[५५०]।
सर्व - व्याधि - प्रशमनी[५५१], सर्व-मृत्यु-निवारिणी[५५२]।।११२
अग्र-गण्याऽचिन्त्य-रूपा[५५३-५४], कलि-कल्मष-नाशिनी[५५५]।
कात्यायनी[५५६] काल-हन्त्री[५५७], कमलाक्ष-निषेविता[५५८]।।११३
ताम्बूल - पूरित - मुखी[५५९], दाडिमी - कुसुम - प्रभा[५६०]।
मृगाक्षी[५६१] मोहिनी[५६२] मुख्या[५६३], मृडानी[५६४] मित्र-रूपिणी[५६५]।।११४
नित्य-तृप्ता[५६६] भक्त-निधिः[५६७], नियन्त्री[५६८] निखिलेश्वरी[५६९]।
मैत्र्यादि-वासना-लभ्या[५७०], महा-प्रलय-साक्षिणी[५७१]।।११५
परा-शक्तिः[५७२] परा-निष्ठा[५७३], प्रज्ञान-घन-रूपिणी[५७४]।
माध्वी-पानालसा[५७५] मत्ता[५७६], मातृका-वर्ण-रूपिणी[५७७]।।११६
महा - कैलास - निलया[५७८], मृणाल - मृदु - दोर्लता[५७९]।
महनीया[५८०] दया-मूर्तिः[५८१], महा-साम्राज्य-शालिनी[५८२]।।११७
आत्म-विद्या[५८३] महा-विद्या[५८४], श्रीविद्या[५८५] काम-सेविता[५८६]।
श्रीषोडशाक्षरी-विद्या[५८७], त्रिकूटा[५८८] काम-कोटिका[५८९]।।११८

कटाक्ष - किङ्करी - भूत - कमला - कोटि - सेविता[५९०]।
शिरः-स्थिता[५९१] चन्द्र-निभा[५९२], भालस्थेन्द्र-धनुष्प्रभा[५९३-९४]।।११९
हृदयस्था[५९५] रवि-प्रख्या[५९६], त्रिकोणान्तर-दीपिका[५९७]।
दाक्षायणी[५९८] दैत्य-हन्त्री[५९९], दक्ष-यज्ञ-विनाशिनी[६००]।।१२०
दरान्दोलित - दीर्घाक्षी[६०१], दर - हासोज्ज्वलन्मुखी[६०२]।
गुरु-मूर्तिः[६०३] गुण-निधिः[६०४], गो-माता[६०५] गुह-जन्म-भूः[६०६]।।१२१
देवेशी[६०७] दण्ड - नीतिस्था[६०८], दहराकाश - रूपिणी[६०९]।
प्रतिपन्मुख्य - राकान्त - तिथि - मण्डल - पूजिता[६१०]।।१२२
कलात्मिका[६११] कला-नाथा[६१२], काव्यालाप-विमोदिनी[६१३]।
स - चामर - रमा - वाणी - सव्य-दक्षिण-सेविता[६१४]।।१२३
आदि - शक्तिरमेयात्मा[६१५-१७], परमा[६१८] पावनाकृतिः[६१९]।
अनेक - कोटि - ब्रह्माण्ड - जननी[६२०] दिव्य-विग्रहा[६२१]।।१२४
क्लीङ्कारी[६२२] केवला[६२३] गुह्या[६२४], कैवल्य-पद-दायिनी[६२५]।
त्रिपुरा[६२६] त्रि-जगद्-वन्द्या[६२७], त्रि-मूर्तिः[६२८] त्रि-दशेश्वरी[६२९]।।१२५
त्र्यक्षरी[६३०] दिव्य-गन्धाढ्या[६३१], सिन्दूर-तिलकाञ्चिता[६३२]।
उमा[६३३] शैलेन्द्र-तनया[६३४], गौरी[६३५] गन्धर्व-सेविता[६३६]।।१२६
विश्व-गर्भा[६३७] स्वर्ण - गर्भावरदा[६३८-३९] वागधीश्वरी[६४०]।
ध्यान-गम्याऽपरिच्छेद्या[६४१-४२], ज्ञानदा[६४३] ज्ञान-विग्रहा[६४४]।।१२७
सर्व-वेदान्त-संवेद्या[६४५], सत्यानन्द - स्वरूपिणी[६४६]।
लोपा-मुद्रार्चिता[६४७] लीला-क्लृप्त-ब्रह्माण्ड-मण्डला[६४८]।।१२८
अदृश्या[६४९] दृश्य-रहिता[६५०], विज्ञात्री[६५१] वेद्य-वर्जिता[६५२]।
योगिनी[६५३] योगदा[६५४] योग्या[६५५], योगानन्द - युग - धरा[६५६]।।१२९

इच्छा-शक्ति-ज्ञान-शक्ति-क्रिया-शक्ति-स्वरूपिणी[६५७]।
सर्वाधारा[६५८] सु-प्रतिष्ठा[६५९], सदसद्-रूप-धारिणी[६६०]।।१३०
अष्ट-मूर्तिरजा-जैत्री[६६१-६३], लोक-यात्रा-विधायिनी[६६४]।
एकाकिनी[६६५] भूम-रूपा[६६६], निर्द्वैता[६६७] द्वैत-वर्जिता[६६८]।।१३१
अन्नदा[६६९] वसुदा[६७०] वृद्धा[६७१], ब्रह्मात्मैक्य-स्वरूपिणी[६७२]।
वृहती[६७३] ब्राह्मणी[६७४] ब्राह्मी[६७५], ब्रह्मानन्दा[६७६] बलि-प्रिया[६७७]।।१३२
भाषा-रूपा[६७८] बृहत्-सेना[६७९], भावाभाव-विवर्जिता[६८०]।
सुखाराध्या[६८१] शुभ-करी[६८२], शोभना[६८३] सुलभा - गतिः[६८४]।।१३३
राज-राजेश्वरी[६८५] राज्य-दायिनी[६८६] राज्य-वल्लभा[६८७]।
राजत्-कृपा[६८८] राज-पीठ-निवेशित-निजाश्रिता[६८९]।।१३४
राज्य-लक्ष्मीः[६९०] कोश-नाथा[६९१], चतुरङ्ग-बलेश्वरी[६९२]।
साम्राज्य-दायिनी[६९३] सत्य-सन्धा[६९४] सागर-मेखला[६९५]।।१३५
दीक्षिता[६९६] दैत्य-शमनी[६९७], सर्व-लोक-वशङ्करी[६९८]।
सर्वार्थ-दात्री[६९९] सावित्री[७००], सच्चिदानन्द-रूपिणी[७०१]।।१३६
देश-कालापरिच्छिन्ना[७०२], सर्वगा[७०३] सर्व-मोहिनी[७०४]।
सरस्वती[७०५] शास्त्र-मयी[७०६], गुहाम्बा[७०७] गुह्य-रूपिणी[७०८]।।१३७
सर्वोपाधि-विनिर्मुक्ता[७०९], सदा-शिव-पति-व्रता[७१०]।
सम्प्रदायेश्वरी[७११] साध्वी[७१२], गुरु-मण्डल-रूपिणी[७१३]।।१३८
कुलोत्तीर्णा[७१४] भगाराध्या[७१५], माया[७१६] मधु-मती[७१७] मही[७१८]।
गणाम्बा[७१९] गुह्यकाराध्या[७२०], कोमलाङ्गी[७२१] गुरु-प्रिया[७२२]।।१३९
स्वतन्त्रा[७२३] सर्व-तन्त्रेशी[७२४], दक्षिणा-मूर्ति-रूपिणी[७२५]।
सनकादि - समाराध्या[७२६], शिव - ज्ञान - प्रदायिनी[७२७]।।१४०

चित्-कलानन्द-कलिका[728-29], प्रेम-रूपा[730] प्रियङ्करी[731]।
नाम-पारायण-प्रीता[732], नन्दि-विद्या[733] नटेश्वरी[734]।।१४१
मिथ्या-जगदधिष्ठाना[735], मुक्तिदा[736] मुक्ति-रूपिणी[737]।
लास्य-प्रिया[738] लय-करी[739], लज्जा[740] रम्भादि-वन्दिता[741]।।१४२
भव - दाव - सुधा - वृष्टिः[742], पापारण्य - दावानला[743]।
दौर्भाग्य-तूल-वातूला[744], जरा-ध्वान्त-रवि-प्रभा[745]।।१४३
भाग्याब्धि-चन्द्रिका[746] भक्त-चित्त-केकि-घनाघना[747]।
रोग - पर्वत - दम्भोलिः[748], मृत्यु - दारु - कुठारिका[749]।।१४४
महेश्वरी[750] महा-काली[751], महा-ग्रासा[752] महाऽशना[753]।
अपर्णा[754] चण्डिका[755] चण्ड-मुण्डासुर-निषूदिनी[756]।।१४५
क्षराक्षरात्मिका[757] सर्व-लोकेशी[758] विश्व-धारिणी[759]।
त्रि-वर्ग-दात्री[760] सुभगा[761], त्र्यम्बिका[762] त्रिगुणात्मिका[763]।।१४६
स्वर्गापवर्गदा[764] शुद्धा[765], जपा-पुष्प-निभाऽऽकृतिः[766]।
ओजोवती[767] द्युति-धरा[768], यज्ञ-रूपा[769] प्रिय-व्रता[770]।।१४७
दुराराध्या[771] दुराधर्षा[772], पाटली - कुसुम - प्रिया[773]।
महती[774] मेरु-निलया[775], मन्दार - कुसुम - प्रिया[776]।।१४८
वीराराध्या[777] विराट्-रूपा[778], विरजा[779] विश्वतोमुखी[780]।
प्रत्यग्-रूपा[781] परा-काशा[782], प्राणदा[783] प्राण-रूपिणी[784]।।१४९
मार्तण्ड-भैरवाराध्या[785], मन्त्रिणी-न्यस्त-राज्य-धूः[786]।
त्रिपुरेशी[787] जयत्-सेना[788], निस्त्रैगुण्या[789] परापरा[790]।।१५०
सत्य - ज्ञानानन्द - रूपा[791], सामरस्य - परायणा[792]।
कपर्दिनी[793] कला-माला[794], काम-धुक्[795] काम-रूपिणी[796]।।१५१

कला-निधिः[७९७] काव्य-कला[७९८], रसज्ञा[७९९] रस-शेवधिः[८००]।
पुष्टा[८०१] पुरातना[८०२] पूज्या[८०३], पुष्करा[८०४] पुष्करेक्षणा[८०५]।।१५२
परं-ज्योतिः[८०६] परं-धाम[८०७], परमाणुः[८०८] परात्परा[८०९]।
पाश-हस्ता[८१०] पाश-हन्त्री[८११], पर-मन्त्र-विभेदिनी[८१२]।।१५३
मूर्ताऽमूर्ता[८१३-१४] नित्य-तृप्ता[८१५], मुनि-मानस-हंसिका[८१६]।
सत्य-व्रता[८१७] सत्य-रूपा[८१८], सर्वान्तर्यामिणी[८१९] सती[८२०]।।१५४
ब्रह्माणी[८२१] ब्रह्मा[८२२] जननी[८२३], बहु-रूपा[८२४] बुधार्चिता[८२५]।
प्रसवित्री[८२६] प्रचण्डाऽऽज्ञा[८२७-२८], प्रतिष्ठा[८२९] प्रकटाकृतिः[८३०]।।१५५
प्राणेश्वरी[८३१] प्राण-दात्री[८३२], पञ्चाशत्-पीठ-रूपिणी[८३३]।
विशृङ्खला[८३४] विविक्तस्था[८३५], वीर-माता[८३६] वियत्-प्रसूः[८३७]।।१५६
मुकुन्दा[८३८] मुक्ति-निलया[८३९], मूल-विग्रह-रूपिणी[८४०]।
भावज्ञा[८४१] भाव-रोगघ्नी[८४२], भव-चक्र-प्रवर्त्तिनी[८४३]।।१५७
छन्दः-सारा[८४४] शास्त्र-सारा[८४५], मन्त्र-सारा[८४६] तलोदरी[८४७]।
उदार - कीर्तिरुद्दाम-वैभवा[८४८-४९] वर्ण-रूपिणी[८५०]।।१५८
जन्म - मृत्यु - जरा-तप्त-जन-विश्रान्ति-दायिनी[८५१]।
सर्वोपनिषदुद्घुष्टा[८५२], शान्त्यतीत - कलात्मिका[८५३]।।१५९
गम्भीरा[८५४] गगनान्तःस्था[८५५], गर्विता[८५६] गान-लोलुपा[८५७]।
कल्पना-रहिता[८५८] काष्ठाकान्ता[८५९-८६०] कान्तार्ध-विग्रहा[८६१]।।१६०
कार्य-कारण-निर्मुक्ता[८६२], काम - केलि - तरङ्गिता[८६३]।
कनत्-कनक-ताटङ्का[८६४], लीला-विग्रह-धारिणी[८६५]।।१६१
अजा[८६६] क्षय-विनिर्मुक्ता[८६७] मुग्धा[८६८] क्षिप्र-प्रसादिनी[८६९]।
अन्तर्मुख - समाराध्या[८७०], बहिर्मुख - सुदुर्लभा[८७१]।।१६२

त्रयी[८७२] त्रिवर्ग-निलया[८७३], त्रिस्था[८७४] त्रिपुर-मालिनी[८७५]।
निरामया[८७६] निरालम्बा[८७७], स्वात्मा-रामा[८७८] सुधा-स्रुतिः[८७९]।।१६३
संसार - पङ्क - निर्मग्न - समुद्धरण - पण्डिता[८८०]।
यज्ञ-प्रिया[८८१] यज्ञ-कर्त्री[८८२], यज-मान-स्वरूपिणी[८८३]।।१६४
धर्माधारा[८८४] धनाध्यक्षा[८८५], धन-धान्य-विवर्धिनी[८८६]।
विप्र-प्रिया[८८७] विप्र-रूपा[८८८], विश्व-भ्रमण-कारिणी[८८९]।।१६५
विश्व-ग्रासा[८९०] विद्रुमाभा[८९१], वैष्णवी[८९२] विष्णु-रूपिणी[८९३]।
अयोनिर्योनि-निलया[८९४-९५], कूटस्था[८९६] कुल-रूपिणी[८९७]।।१६६
वीर-गोष्ठी-प्रिया[८९८] वीरा[८९९], नैष्कर्म्या[९००] नाद-रूपिणी[९०१]।
विज्ञान-कलना[९०२] कल्या[९०३], विदग्धा[९०४] वैन्दवासिनी[९०५]।।१६७
तत्त्वाधिका[९०६] तत्त्व-मयी[९०७], तत्त्वमर्थ-स्वरूपिणी[९०८]।
साम-गान-प्रिया[९०९] सौम्या[९१०], सदा-शिव-कुटुम्बिनी[९११]।।१६८
सव्यापसव्य-मार्गस्था[९१२], सर्वापद्-विनिवारिणी[९१३]।
स्वस्था[९१४] स्वभाव-मधुरा[९१५], धीरा[९१६] धीर-समर्चिता[९१७]।।१६९
चैतन्यार्घ्य-समाराध्या[९१८], चैतन्य - कुसुम - प्रिया[९१९]।
सदोदिता[९२०] सदा - तुष्टा[९२१], तरुणादित्य - पाटला[९२२]।।१७०
दक्षिणाऽदक्षिणाराध्या[९२३], दर - स्मेर - मुखाम्बुजा[९२४]।
कौलिनी - केवलाऽनर्घ्य - कैवल्य - पद - दायिनी[९२५-२६]।।१७१
स्तोत्र-प्रिया[९२७] स्तुति-मती[९२८], श्रुति-संस्तुत-वैभवा[९२९]।
मनस्विनी[९३०] मान-वती[९३१], महेशी[९३२] मङ्गलाकृतिः[९३३]।।१७२
विश्व-माता[९३४] जगद्धात्री[९३५], विशालाक्षी[९३६] विरागिणी[९३७]।
प्रगल्भा[९३८] परमोदारा[९३९], पराऽऽमोदा[९४०] मनो-मयी[९४१]।।१७३

व्योम-केशी[१४२] विमानस्था[१४३], वज्रिणी[१४४] वामकेश्वरी[१४५]।
पञ्च-यज्ञ-प्रिया[१४६] पञ्च-प्रेत-मञ्चाधि-शायिनी[१४७]।।१७४
पञ्चमी[१४८] पञ्च-भूतेशी[१४९], पञ्च-संख्योपचारिणी[१५०]।
शाश्वती[१५१] शाश्वतैश्वर्या[१५२], शर्मदा[१५३] शम्भु-मोहिनी[१५४]।।१७५
धरा[१५५] धर-सुता[१५६] धन्या[१५७]. धर्मिणी[१५८] धर्म-वर्धिनी[१५९]।
लोकातीता[१६०] गुणातीता[१६१], सर्वातीता[१६२] शमात्मिका[१६३]।।१७६
बन्धूक-कुसुम-प्रख्या[१६४], बाला[१६५] लीला-विनोदिनी[१६६]।
सुमङ्गली[१६७] सुख-करी[१६८], सु-वेषाढ्या[१६९] सु-वासिनी[१७०]।।१७७
सुवासिन्यर्चन-प्रीताऽऽशोभना[१७१-७२] शुद्ध-मानसा[१७३]।
विन्दु - तर्पण-सन्तुष्टा[१७४], पूर्वजा[१७५] त्रिपुराऽम्बिका[१७६]।।१७८
दश - मुद्रा - समाराध्या[१७७], त्रिपुराश्री - वशङ्करी[१७८]।
ज्ञान-मुद्रा[१७९] ज्ञान-गम्या[१८०], ज्ञान-ज्ञेय-स्वरूपिणी[१८१]।।१७९
योनि-मुद्रा[१८२] त्रिखण्डेशी[१८३], त्रिगुणाम्बा[१८४-८५] त्रिकोणगा[१८६]।
अनघाऽद्भुत-चरित्रा[१८७-८८], वाञ्छितार्थ-प्रदायिनी[१८९]।।१८०
अभ्यासातिशय - ज्ञाता[१९०], षडध्वातीत - रूपिणी[१९१]।
अव्याज-करुणा-मूर्तिः[१९२], अज्ञान-ध्वान्त-दीपिका[१९३]।।१८१
आबाल-गोप-विदिता[१९४], सर्वानुल्लङ्घ्य-शासना[१९५]।
श्रीचक्रराज - निलया[१९६], श्रीमत् - त्रिपुर - सुन्दरी[१९७]।
श्रीशिवा[१९८] शिव-शक्त्यैक्य-रूपिणी[१९९] ललिताऽम्बिका[१०००]ॐ।।१८२

अन्त में विनियोग, ऋष्यादि-न्यास, कर-षडङ्ग-न्यास, ध्यान तथा मानस-पूजन पुनः करे। यथा–

।।विनियोगः।।

ॐ अस्य श्रीललिता-सहस्र-नाम-स्तोत्र-माला-मन्त्रस्य श्रीवशिन्यादि-वाग्-देवता ऋषयः। अनुष्टुप् छन्दः। श्रीललिताऽम्बा देवता। कएईलह्रीं बीजम्। सकलह्रीं शक्तिः। हसकहलह्रीं कीलकम्। श्रीललिताऽम्बा-प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

।।ऋष्यादि-न्यास।।

श्रीवशिन्यादि-वाग्-देवता-ऋषिभ्यो नमः शिरसि। अनुष्टुप्-छन्दसे नमः मुखे। श्रीललिताऽम्बा देवतायै नमः हृदि। कएईलह्रीं-बीजाय नमः गुह्ये। सकलह्रीं-शक्तये नमः पादयोः। हसकहलह्रीं - कीलकाय नमः सर्वाङ्गे। श्रीललिताऽम्बा-प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यास	अङ्ग-न्यास
ऐं कएईलह्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
क्लीं हसकहलह्रीं	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
सौः सकलह्रीं	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ऐं कएईलह्रीं	अनामाभ्यां नमः	कवचाय हुम्
क्लीं हसकहलह्रीं	कनिष्ठाभ्यां नमः	नेत्र-त्रयाय वौषट्
सौः सकलह्रीं	करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

।।ध्यानम्।।

सिन्दूरारुण-विग्रहां त्रि-नयनां माणिक्य-मौलि-स्फुरत्-
तारा-नायक-शेखरां स्मित-मुखीमापीन-वक्षो-रुहाम्।
पाणिभ्यामलि-पूर्ण-रत्न-चषकं रक्तोत्पलं बिभ्रतीम्,
सौम्यां रत्न-घटस्थ-रक्त-चरणां ध्याये परामम्बिकाम्।।

।।मानस पूजन।।

ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीललिताम्बा-प्रीतये समर्पयामि नमः (अधो-मुख कनिष्ठा-अंगुष्ठ)।
ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीललिताम्बा-प्रीतये समर्पयामि नमः (अधो-मुख तर्जनी-अंगुष्ठ)।
ॐ यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीललिताम्बा-प्रीतये घ्रापयामि नमः (ऊर्ध्व-मुख तर्जनी-अंगुष्ठ)।
ॐ रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीललिताम्बा-प्रीतये दर्शयामि नमः (ऊर्ध्व-मुख मध्यमा-अंगुष्ठ)।
ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीललिताम्बा-प्रीतये निवेदयामि नमः (ऊर्ध्व-मुख अनामा-अंगुष्ठ)।
ॐ सं सर्वात्मकं ताम्बूलं श्रीललिताम्बा-प्रीतये समर्पयामि नमः (ऊर्ध्व-मुख सर्वांगुलि)।

इसके बाद प्रार्थना करे-

अनेन श्रीललिता-सहस्र-नाम-स्तोत्र-पाठेन
श्रीराज-राजेश्वरी महा-त्रिपुर-सुन्दरी देवता प्रीयताम्।

।।ॐ तत् सत्।।

।।फल-श्रुति।।

।।श्रीहयग्रीव उवाच।।

इत्येवं नाम - साहस्त्रं, कथितं ते घटोद्भव!।
रहस्यानां रहस्यं च, ललिता - प्रीति - दायकम्।।०१
अनेन सदृशं स्तोत्रं, न भूतं न भविष्यति।
सर्व - रोग - प्रशमनं, सर्व - सम्पत् - प्रवर्धनम्।।०२
सर्वापमृत्यु - शमनं, काल - मृत्यु - निवारणम्।
सर्व - ज्वरार्ति - शमनं, दीर्घायुष्य - प्रदायकम्।।०३
पुत्र - प्रदमपुत्राणां, पुरुषार्थ - प्रदायकम्।
इदं विशेषाच्छ्री-देव्याः, स्तोत्रं प्रीति-विधायकम् ।।०४
जपेन्नित्यं प्रयत्नेन, ललितोपास्ति - तत्परः।
प्रातः स्नात्वा विधानेन, सन्ध्या - कर्म समाप्य च।।०५
पूजा - गृहं ततो गत्वा, चक्र - राजं समर्चयेत्।
विद्यां जपेत् सहस्त्रं वा, त्रि - शतं शतमेव वा।।०६
रहस्य - नाम - साहस्त्रमिदं पश्चात् पठेन्नरः।
जन्म - मध्ये सकृच्चापि, य एतत् पठते सुधीः।।०७
तस्य पुण्य - फलं वक्ष्ये, शृणु त्वं कुम्भ-सम्भव!।
गङ्गादि-सर्व-तीर्थेषु, यः स्नायात् कोटि-जन्मसु।।०८
कोटि - लिङ्ग - प्रतिष्ठां तु, यः कुर्यादविमुक्तके।
कुरु - क्षेत्रे च यो दद्यात्, कोटि - वारं रवि - ग्रहे।।०९
कोटिं सौवर्ण - भाराणां, श्रोत्रियेषु द्वि-जन्मसु।
यः कोटिं हय - मेधानामाहरेद् गाङ्ग - रोधसि।।१०
आचरेत् कूप - कोटीर्यो, निर्जले मरु - भू - तले।
दुर्भिक्षे यः प्रति-दिनं, कोटि - ब्राह्मण - भोजनम् ।।११
श्रद्धया परया कुर्यात्, सहस्त्र - परि - वत्सरान्।
तत्-पुण्यं कोटि-गुणितं, लभेत् पुण्यमनुत्तमम् ।।१२

रहस्य - नाम - साहस्त्रे, नाम्नोऽप्येकस्य कीर्तनात्।
रहस्य - नाम - साहस्त्रे, नामैकमपि यः पठेत्।।१३
तस्य पापानि नश्यन्ति, महान्त्यपि न संशयः।
नित्य - कर्माननुष्ठानान्निषिद्ध - करणादपि।।१४
यत् - पापं जायते पुंसां, तत्-सर्वं नश्यति ध्रुवम् ।
बहुनाऽत्र किमुक्तेन, शृणु त्वं कलशी - सुत!।।१५
अत्रैक - नाम्नो या शक्तिः, पातकानां निवर्तने।
तन्निवर्त्यमघं कर्तुं, नालं लोकाश्चतुर्दश।।१६
यस्त्यक्त्वा नाम - साहस्त्रं, पाप - हानिमभीप्सति।
स हि शीत - निवृत्त्यर्थं, हिम - शैलं निषेवते।।१७
भक्तो यः कीर्तयेन्नित्यमिदं नाम - सहस्त्रकम्।
तस्मै श्रीललिता देवी, प्रीताऽभीष्टं प्रयच्छति।।१८
अकीर्तयन्निदं स्तोत्रं, कथं भक्तो भविष्यति?
नित्यं सङ्कीर्तनाशक्तः, कीर्तयेत् पुण्य - वासरे।
संक्रान्तौ विषुवे चैव, स्व - जन्म - त्रितयेऽयने।।१९
नवम्यां वा चतुर्दश्यां, सितायां शुक्र - वासरे।
कीर्तयेन्नाम - साहस्त्रं, पौर्णमास्यां विशेषतः।।२०
पौर्णमास्यां चन्द्र-बिम्बे, ध्यात्वा श्रीललिताम्बिकाम्।
पञ्चोपचारैः सम्पूज्य, पठेन्नाम - सहस्त्रकम्।।२१
सर्व - रोगाः प्रणश्यन्ति, दीर्घायुष्यं च विन्दति।
अयमायुष्करो नाम, प्रयोगः कल्पनोदितः।।२२
ज्वरार्तं शिरसि स्पृष्ट्वा, पठेन्नाम - सहस्त्रकम्।
तत्-क्षणात् प्रशमं याति, शिरस्तोदो ज्वरोऽपि च।।२३
सर्व-व्याधि-निवृत्त्यर्थं, स्पृष्ट्वा भस्म जपेदिदम्।
तद् - भस्म-धारणादेव, नश्यन्ति व्याधयो क्षणात्।।२४

जलं संमन्त्र्य कुम्भस्थं, नाम - साहस्रतो मुने!।
अभिषिञ्चेद् ग्रह-ग्रस्तान्, ग्रहा नश्यन्ति तत्क्षणात् ।।२५
सुधा-सागर-मध्यस्थां, ध्यात्वा श्रीललिताऽम्बिकाम्।
यः पठेन्नाम - साहस्रं, विषं तस्य विनश्यति।।२६
वन्ध्यानां पुत्र - लाभाय, नाम - साहस्र - मन्त्रितम्।
नवनीतं प्रदद्यात्तु, पुत्र - लाभो भवेद् ध्रुवम् ।।२७
देव्याः पाशेन सम्बद्धामाकृष्टामंकुशेन च।
ध्यात्वाऽभीष्टां स्त्रियं रात्रौ, पठेन्नाम - सहस्रकम् ।।२८
आयाति स्व - समीपं, सा यद्यप्यन्तः - पुरं गता।
राजाऽऽकर्षण - कामश्चेद्, राजाऽवसथ-दिङ्-मुखः।।२९
त्रि - रात्रं यः पठेदेतच्छ्री - देवी - ध्यान - तत्परः।
स राजा पार - वश्येन, मातङ्गं वा मतङ्गजम् ।।३०
आरुह्याऽऽयाति निकटं, दास - वत् प्रणिपत्य च।
तस्मै राज्यं च कोशं च, ददात्येव वशं गतः।।३१
रहस्य - नाम - साहस्रं, यः कीर्तयति नित्यशः।
तन्मुखालोक - मात्रेण, मुह्येल्लोक - त्रयं मुने!।।३२
यस्त्विदं नाम - साहस्रं, सकृत् पठति भक्ति - मान्।
तस्य ये शत्रवस्तेषां, निहन्ता शरभेश्वरः।।३३
यो वाऽभिचारं कुरुते, नाम - साहस्र - पाठके।
निर्वर्त्य तत् - क्रियां हन्यात्, तं वै प्रत्यङ्गिरा स्वयम् ।।३४
ये क्रूर - दृष्ट्या वीक्ष्यन्ते, नाम-साहस्र-पाठकम्।
तानन्धान् कुरुते क्षिप्रं, स्वयं मार्तण्ड - भैरवः।।३५
धनं यो हरते चोरैर्नाम - साहस्र - जापिना।
यत्र कुत्र स्थितं वापि, क्षेत्रपालो निहन्ति तम्।।३६
विद्यासु कुरुते वादं, यो विद्वान् नाम - जापिना।
तस्य वाक् - स्तम्भनं सद्यः, करोति नकुलेश्वरी।।३७

यो राजा कुरुते वैरं, नाम साहस्र - जापिना।
चतुरङ्ग - बलं तस्य, दण्डिनी संहरेत् स्वयम् ।।३८
यः पठेन्नाम - साहस्त्रं, षण्मासं भक्ति - संयुतः।
लक्ष्मीश्चाञ्चल्य - रहिता, सदा तिष्ठति तद् - गृहे।।३९
मासमेकं प्रति - दिनं, त्रि - वारं यः पठेन्नरः।
भारती तस्य जिह्वाग्रे, रङ्गे नृत्यति नित्यशः।।४०
यस्त्वेक - वारं पठति, पक्षमेकमतन्द्रितः।
मुह्यन्ति काम - वशगा, मृगाक्ष्यस्तस्य वीक्षणात्।।४१
यः पठेन्नाम - साहस्त्रं, जन्म - मध्ये सकृन्नरः।
तद्-दृष्टि-गोचराः सर्वे, मुच्यन्ते सर्व-किल्विषैः।।४२
यो वेत्ति नाम - साहस्त्रं, तस्मै देयं द्वि - जन्मने।
अन्नं वस्त्रं धनं धान्यं, नान्येभ्यस्तु कदाचन।।४३
श्रीमन्त्र - राजं यो वेत्ति, श्री - चक्रं यः समर्चति।
यः कीर्तयति नामानि, तं सत् - पात्रं विदुर्बुधाः।।४४
तस्मै देयं प्रयत्नेन, श्रीदेवी - प्रीतिमिच्छता।।४५
न कीर्तयति नामानि, मन्त्र - राजं न वेत्ति यः।
पशु - तुल्यः स विज्ञेयस्तस्मै दत्तं निरर्थकम्।।४६
परीक्ष्य विद्या - विदुषस्तेभ्यो दद्याद् विचक्षणः।।४७
श्रीमन्त्र - राज - सदृशो, यथा मन्त्रो न विद्यते।
देवता ललिता - तुल्या, यथा नास्ति घटोद्भव!
रहस्य - नाम - साहस्र-तुल्या नास्ति तथा स्तुतिः।।४८
लिखित्वा पुस्तके यस्तु, नाम - साहस्रमुत्तमम्।
समर्चयेत् सदा भक्त्या, तस्य तुष्यति सुन्दरी।।४९
बहुनाऽत्र किमुक्तेन, शृणु त्वं कुम्भ - सम्भव!।
नानेन सदृशं स्तोत्रं, सर्व - तन्त्रेषु विद्यते।।५०

तस्मादुपासको नित्यं, कीर्तयेदिदमादरात् ।
एभिर्नाम - सहस्त्रैस्तु, श्री - चक्रं योऽर्चयेत् सकृत् ।।५१
पद्मैर्वा तुलसी - पुष्पैः, कह्लारैर्वा कदम्बकैः।
चम्पकैर्जाति - कुसुमैर्मल्लिका - करवीरकैः।।५२
उत्पलैर्विल्व - पत्रैर्वा, कुन्द - केसर - पाटलैः।
अन्यैः सुगन्धि - कुसुमैः, केतकी - माधवी - मुखैः।।५३
तस्य पुण्य - फलं वक्तुं, न शक्नोति महेश्वरः।।५४
सा वेत्ति ललिता देवी, स्व - चक्रार्चनजं फलम्।
अन्ये कथं विजानीयुर्ब्रह्माद्याः स्वल्प - मेधसः?।।५५
प्रति - मासं पौर्णमास्यामेभिर्नाम - सहस्रकैः।
रात्रौ यश्चक्र - राजस्थामर्चयेत् पर - देवताम् ।।५६
स एव ललिता - रूपस्तद् - रूपा ललिता स्वयम्।
न तयोर्विद्यते भेदो, भेद - कृत् पाप-कृद् भवेत् ।।५७
महा-नवम्यां यो भक्तः, श्रीदेवीं चक्र-मध्यगाम्।
अर्चयेन्नाम - साहस्रैस्तस्य मुक्तिः करे स्थिता।।५८
यस्तु नाम - साहस्त्रेण, शुक्र - वारे समर्चयेत् ।
चक्र - राजे महा - देवीं, तस्य पुण्य - फलं श्रृणु।।५९
सर्वान् कामानवाप्येह, सर्व - सौभाग्य - संयुतः।
पुत्र-पौत्रादि-संयुक्तो, भुक्त्वा भोगान् यथेप्सितान् ।।६०
अन्ते श्रीललिता - देव्याः, सायुज्यमति - दुर्लभम्।
प्रार्थनीयं शिवाद्यैश्च, प्राप्नोत्येव न संशयः।।६१
यः सहस्रं ब्राह्मणानामेभिर्नाम - सहस्रकैः।
समर्च्य भोजयेद् भक्त्या, पायसापूप - षड् - रसैः।।६२
तस्मै प्रीणाति ललिता, स्व - साम्राज्यं प्रयच्छति।
न तस्य दुर्लभं वस्तु, त्रिषु लोकेषु विद्यते।।६३

निष्कामः कीर्तयेद् यस्तु, नाम - साहस्रमुत्तमम्।
ब्रह्म - ज्ञानमवाप्नोति, येन मुच्येत बन्धनात्।।६४
धनार्थी धनमाप्नोति, यशोऽर्थी चाप्नुयाद् यशः।
विद्यार्थी चाप्नुयाद् विद्यां, नाम-साहस्र-कीर्तनात्।।६५
नानेन सदृशं स्तोत्रं, भोग - मोक्ष - प्रदं मुने!।
कीर्तनीयमिदं तस्माद्, भोग - मोक्षार्थिभिर्नरैः।।६६
चतुराश्रम - निष्ठैश्च, कीर्तनीयमिदं सदा।
स्व - धर्म - समनुष्ठान - वैकल्य - परिपूर्तये।।६७
कलौ पापैक - बहुले, धर्मानुष्ठान - वर्जिते।
नामानुकीर्तनं मुक्त्वा, नृणां नान्यत्-परायणम्।।६८
लौकिकाद् वचनान्मुख्यं, विष्णु - नामानुकीर्तनम्।
विष्णु - नाम - सहस्राच्च, शिव - नामैकमुत्तमम्।।६९
शिव - नाम - सहस्राच्च, देव्या - नामैकमुत्तमम्।
देवी - नाम - सहस्राणि, कोटिशः सन्ति कुम्भज़!।
तेषु मुख्यं दश - विधं, नाम - साहस्रमुच्यते।।७०
रहस्य - नाम - साहस्रमिदं शस्तं दशस्वपि।
तस्मात् सङ्कीर्तयेन्नित्यं, कलि - दोष - निवृत्तये।।७१
मुख्यं श्री - मातृ - नामेति, न जानन्ति विमोहिताः।।७२
विष्णु - नाम - पराः केचिच्छिव - नाम-पराः परे।
न कश्चिदपि लोकेषु, ललिता - नाम - तत् - परः।।७३
येनान्य - देवता - नाम, कीर्तितं जन्म - कोटिषु।
तस्यैव भवति श्रद्धा, श्रीदेवी - नाम - कीर्तने।।७४
चरमे जन्मनि यथा, श्रीविद्योपासको भवेत्।
नाम - साहस्र - पाठश्च, तथा चरम - जन्मनि।।७५
यथैव विरला लोके, श्रीविद्याऽऽचार - वेदिनः।
तथैव विरलो गुह्य - नाम - साहस्र - पाठकः।।७६

मन्त्र - राज - जपश्चैव, चक्र - राजार्चनं तथा।
रहस्य - नाम - पाठश्च, नाल्पस्य तपसः फलम्।।७७
अपठन् नाम - साहस्रं, प्रीणयेद् यो महेश्वरीम्।
स चक्षुषा विना रूपं, पश्येदेव नरो परः।।७८
रहस्य - नाम-साहस्रं, त्यक्त्वा यः सिद्धि - कामुकः।
स भोजनं विना नूनं, क्षुन्निवृत्तिमभीप्सति।।७९
यो भक्तो ललिता - देव्याः, स नित्यं कीर्तयेदिदम्।
नान्यथा प्रीयते देवी, कल्प - कोटि - शतैरपि।।८०
तस्माद् रहस्य - नामानि, श्रीमातुः प्रयतः पठेत्।
इति ते कथितं स्तोत्रं, रहस्यं कुम्भ - सम्भव!।।८१
नाविद्या - वेदिने ब्रूयान्नाभक्ताय कदाचन।
यथैव गोप्या श्रीविद्या, तथा गोप्यमिदं मुने!।।८२
पशु - तुल्येषु न ब्रूयाज्जनेषु स्तोत्रमुत्तमम्।
यो ददाति अनिवेद्ये, श्रीविद्या - रहिताय तु।।८३
तस्मै कुप्यन्ति योगिन्यः, सोऽनर्थः सु-महान् स्मृतः।
रहस्य - नाम - साहस्रं, तस्मात् सङ्गोपयेदिदम्।।८४
स्वतन्त्रेण मया नोक्तं, तवापि कलशोद्भव!।
ललिता - प्रेरणादेव, मयोक्तं स्तोत्रमुत्तमम् ।।८५
कीर्तनीयमिदं भक्त्या, कुम्भ - योने! निरन्तरम्।
तेन तुष्टा महा - देवी, तवाभीष्टं प्रदास्यति।।८६

।।श्री सूत उवाच।।

इत्युक्त्वा श्रीहयग्रीवो, ध्यात्वा श्रीललिताऽम्बिकाम्।
आनन्द - मग्न - हृदयः, सद्यः पुलकितोऽभवत् ।।८७

।।श्रीब्रह्माण्ड-पुराणे ललितोपाख्याने श्रीहयग्रीवागस्त्य-संवादे
श्रीललिता-सहस्त्र-नाम-स्तोत्रम्।।

श्रीललिता-सहस्त्र-नामावली-जप-साधना

।।विनियोगः।।

ॐ अस्य श्रीललिता-सहस्त्र-नाम-स्तोत्र-माला-मन्त्रस्य श्रीवशिन्यादि-वाग्-देवता ऋषयः। अनुष्टुप् छन्दः। श्रीललिताऽम्बा देवता। कएईलह्रीं बीजम्। सकलह्रीं शक्तिः। हसकहलह्रीं कीलकम्। श्रीललिताऽम्बा-प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

।।ऋष्यादि-न्यास।।

श्रीवशिन्यादि-वाग्-देवता-ऋषिभ्यो नमः शिरसि। अनुष्टुप्-छन्दसे नमः मुखे। श्रीललिताऽम्बा देवतायै नमः हृदि। कएईलह्रीं-बीजाय नमः गुह्ये। सकलह्रीं-शक्तये नमः पादयोः। हसकहलह्रीं-कीलकाय नमः सर्वाङ्गे। श्रीललिताऽम्बा-प्रीत्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यास	अङ्ग-न्यास
ऐं कएईलह्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
क्लीं हसकहलह्रीं	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
सौः सकलह्रीं	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ऐं कएईलह्रीं	अनामाभ्यां नमः	कवचाय हुम्
क्लीं हसकहलह्रीं	कनिष्ठाभ्यां नमः	नेत्र-त्रयाय वौषट्
सौः सकलह्रीं	करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

।।ध्यानम्।।

सिन्दूरारुण-विग्रहां त्रि-नयनां माणिक्य-मौलि-स्फुरत्-
तारा-नायक-शेखरां स्मित-मुखीमापीन-वक्षो-रुहाम्।
पाणिभ्यामलि-पूर्ण-रत्न-चषकं रक्तोत्पलं बिभ्रतीम्,
सौम्यां रत्न-घटस्थ-रक्त-चरणां ध्याये परामम्बिकाम्।।

।।मानस पूजन।।

ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीललिताम्बा-प्रीतये समर्पयामि नमः (अधो-मुख कनिष्ठा-अंगुष्ठ)।
ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीललिताम्बा-प्रीतये समर्पयामि नमः (अधो-मुख तर्जनी-अंगुष्ठ)।
ॐ यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीललिताम्बा-प्रीतये घ्रापयामि नमः (ऊर्ध्व-मुख तर्जनी-अंगुष्ठ)।
ॐ रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीललिताम्बा-प्रीतये दर्शयामि नमः (ऊर्ध्व-मुख मध्यमा-अंगुष्ठ)।
ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीललिताम्बा-प्रीतये निवेदयामि नमः (ऊर्ध्व-मुख अनामा-अंगुष्ठ)।
ॐ सं सर्वात्मकं ताम्बूलं श्रीललिताम्बा-प्रीतये समर्पयामि नमः (ऊर्ध्व-मुख सर्वांगुलि)।

।।ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-बीज-युक्त श्रीललिता-सहस्त्र-नामावली।।

०१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमात्रे नमः
०२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहा-राज्ञ्यै नमः
०३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमत्-सिंहासनेश्वर्यै नमः
०४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीचिदग्नि-कुण्ड-सम्भूतायै नमः
०५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीदेव-कार्य-समुद्यतायै नमः
०६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीउद्यद्-भानु-सहस्त्राभायै नमः
०७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीचतुर्बाहु-समन्वितायै नमः
०८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीराग-स्वरूप-पाशाढ्यायै नमः
०९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीक्रोधाकारांकुशोज्ज्वलायै नमः
१०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमनो-रूपेक्षु-कोदण्डायै नमः
११. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपञ्च-तन्मात्र-सायकायै नमः
१२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनिजारुण-प्रभा-पूर-मज्जद्-ब्रह्माण्ड-मण्डलायै नमः
१३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीचम्पकाशोक-पुन्नाग-सौगन्धिक-लसत्-कचायै नमः
१४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकुरुविन्द-मणि-श्रेणी-कनत्-कोटीर-मण्डितायै नमः
१५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीअष्टमी-चन्द्र-विभ्राजदलिक-स्थल-शोभितायै नमः
१६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमुख-चन्द्र-कलङ्काभ-मृग-नाभि-विशेषकायै नमः
१७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीवदन-स्मर-माङ्गल्य-गृह-तोरण-चिल्लिकायै नमः
१८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीवक्त्र-लक्ष्मी-परीवाह-चलन्मीनाभ-लोचनायै नमः
१९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनव-चम्पक-पुष्पाभ-नासा-दण्ड-विराजितायै नमः
२०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीतारा-कान्ति-तिरस्कारि-नासाऽऽभरण-भासुरायै नमः
२१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकदम्ब-मञ्जरी-क्लृप्त-कर्णपूर-मनोहरायै नमः
२२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीताटङ्क-युगली-भूत-तपनोडुप-मण्डलायै नमः
२३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपद्म-राग-शिलाऽऽदर्श-परिभावि-कपोल-भुवे नमः
२४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनव-विद्रुम-बिम्ब-श्रीन्यक्कारि-दशनच्छदायै नमः
२५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीशुद्ध-विद्यांकुराकार-द्विज-पंक्ति-द्वयोज्ज्वलायै नमः
२६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकर्पूर-वीटिकाऽऽमोद-समाकर्षि-दिगन्तरायै नमः
२७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनिज-संल्लाप-माधुर्य-विनिर्भर्त्सित-कच्छप्यै नमः
२८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमन्द-स्मित-प्रभा-पूर-मज्जत्-कामेश-मानसायै नमः

२९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीअनाकलित-सादृश्य-चिबुक-श्री-विराजितायै नमः
३०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकामेश-बद्ध-माङ्गल्य-सूत्र-शोभित-कन्धरायै नमः
३१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकनकाङ्गद-केयूर-कमनीय-भुजान्वितायै नमः
३२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीरत्न-ग्रैवेय-चिन्ताक-लोल-मुक्ता-फलान्वितायै नमः
३३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकामेश्वर-प्रेम-रत्न-मणि-प्रति-पण-स्तन्यै नमः
३४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनाभ्याल-वाल-रोमालि-लता-फल-कुच-द्वय्यै नमः
३५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीलक्ष्य-रोम-लताधारता-समुन्नेय-मध्यमायै नमः
३६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीस्तन-भार-दलन्मध्य-पट्ट-बन्ध-वलि-त्रयायै नमः
३७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीअरुणारुण-कौसुम्भ-वस्त्र-भास्वत्-कटी-तट्यै नमः
३८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीरत्न-किङ्किणिका-रम्य-रशना-दाम-भूषितायै नमः
३९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकामेश-ज्ञात-सौभाग्यमार्दवोरु-द्वयान्वितायै नमः
४०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमाणिक्य-मुकुटाकार-जानु-द्वय-विराजितायै नमः
४१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीइन्द्र-गोप-परिक्षिप्त-स्मर-तूणाभ-जङ्घिकायै नमः
४२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीगूढ-गुल्फायै नमः
४३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कूर्म-पृष्ठ-जयिष्णु-प्रपदान्वितायै नमः
४४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनख-दीधिति-सञ्छन्न-नमज्जन-तमो-गुणायै नमः
४५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपद-द्वय-प्रभा-जाल-परा-कृत-सरोरुहायै नमः
४६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीशिञ्जान-मणि-मञ्जीर-मण्डित-श्री-पदाम्बुजायै नमः
४७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमराली-मन्द-गमनायै नमः
४८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहा-लावण्य-शेवधये नमः
४९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसर्वारुणायै नमः
५०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीअनवद्याङ्ग्यै नमः
५१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसर्वाभरण-भूषितायै नमः
५२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीशिव-कामेश्वराङ्कस्थायै नमः
५३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीशिवायै नमः
५४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीस्वाधीन-वल्लभायै नमः
५५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसुमेरु-शृङ्ग-मध्यस्थायै नमः
५६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमन्नगर-नायिकायै नमः
५७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीचिन्ता-मणि-गृहान्तः स्थायै नमः
५८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपञ्च-ब्रह्मासन-स्थितायै नमः

५९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहा-पद्माटवी-संस्थायै नमः
६०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकदम्ब-वन-वासिन्यै नमः
६१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसुधा-सागर-मध्यस्थायै नमः
६२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकामाक्ष्यै नमः
६३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकाम-दायिन्यै नमः
६४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीदेवर्षि-गण-सङ्घात-स्तूय-मानात्म-वैभवायै नमः
६५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीभण्डासुर-वधोद्युक्त-शक्ति-सेना-समन्वितायै नमः
६६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसम्पत्-करी-समारूढ-सिन्धुर-व्रज-सेवितायै नमः
६७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीअश्वारूढाऽधिष्ठिताश्व-कोटि-कोटिभिरावृतायै नमः
६८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीचक्र-राज-रथारूढ-सर्वायुध-परिष्कृतायै नमः
६९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीगेय-चक्र-रथारूढ-मन्त्रिणी-परि-सेवितायै नमः
७०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकिरि-चक्र-रथारूढ-दण्ड-नाथा-पुरस्कृतायै नमः
७१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीज्वाला मालिनिका-क्षिप्त-वह्नि-प्राकार-मध्यगायै नमः
७२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीभण्ड-सैन्य-वधोद्युक्त-शक्ति-विक्रम-हर्षितायै नमः
७३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनित्या-पराक्रमाऽऽटोप-निरीक्षण-समुत्सुकायै नमः
७४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीभण्ड-पुत्र-वधोद्युक्त-बाला-विक्रम-नन्दितायै नमः
७५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमन्त्रिण्यम्बा-विरचित-विशुक्र-वध-तोषितायै नमः
७६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीविषङ्ग-प्राण-हरण-वाराही-वीर्य-नन्दितायै नमः
७७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकामेश्वर-मुखालोक-कल्पित-श्रीगणेश्वरायै नमः
७८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहा-गणेश-निर्भिन्न-विघ्न-यन्त्र-प्रहर्षितायै नमः
७९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीभण्डासुरेन्द्र-निर्मुक्त-शस्त्र-प्रत्यस्त्र-वर्षिण्यै नमः
८०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकरांगुलि-नखोत्पन्न-नारायण-दशाकृत्यै नमः
८१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहा-पाशुपतास्त्राग्नि-निर्दग्धासुर-सैनिकायै नमः
८२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकामेश्वरास्त्र-निर्दग्ध-स-भण्डासुर-शून्यकायै नमः
८३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीब्रह्मोपेन्द्र-महेन्द्रादि-देव-संस्तुत-वैभवायै नमः
८४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीहर-नेत्राग्नि-सन्दग्ध-काम-सञ्जीवनौषध्यै नमः
८५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमद्-वाग्भव-कूटैक-स्वरूप-मुख-पङ्कजायै नमः
८६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकण्ठाधः-कटि-पर्यन्त-मध्य-कूट-स्वरूपिण्यै नमः
८७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीशक्ति-कूटैकताऽऽपन्न-कट्यधो-भाग-धारिण्यै नमः
८८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमूल-मन्त्रात्मिकायै नमः

०८९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमूल-कूट-त्रय-कलेवरायै नमः
०९०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकुलामृतैक-रसिकायै नमः
०९१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकुल-सङ्केत-पालिन्यै नमः
०९२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकुलाङ्गनायै नमः
०९३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकुलान्तःस्थायै नमः
०९४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकौलिन्यै नमः
०९५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकुल-योगिन्यै नमः
०९६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीअकुलायै नमः
०९७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसमयान्तःस्थायै नमः
०९८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसमयाचार-तत्परायै नमः
०९९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमूलाधारैक-निलयायै नमः
१००. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीब्रह्म-ग्रन्थि-विभेदिन्यै नमः
१०१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमणिपूरान्तरुदितायै नमः
१०२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीविष्णु-ग्रन्थि-विभेदिन्यै नमः
१०३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीआज्ञा-चक्रान्तरालस्थायै नमः
१०४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीरुद्र-ग्रन्थि-विभेदिन्यै नमः
१०५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसहस्त्राराम्बुजारूढायै नमः
१०६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसुधा-साराभि-वर्षिण्यै नमः
१०७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीतडिल्लता-सम-रुच्यै नमः
१०८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीषट्-चक्रोपरि-संस्थितायै नमः
१०९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहा-शक्त्यै नमः
११०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकुण्डलिन्यै नमः
१११. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीविस-तन्तु-तनीयस्यै नमः
११२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीभवान्यै नमः
११३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीभावना-गम्यायै नमः
११४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीभवारण्य-कुठारिकायै नमः
११५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीभद्र-प्रियायै नमः
११६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीभद्र-मूर्तये नमः
११७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीभक्त-सौभाग्य-दायिन्यै नमः
११८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीभक्ति-प्रियायै नमः

११९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीभक्ति-गम्यायै नमः
१२०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीभक्ति-वश्यायै नमः
१२१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीभयापहायै नमः
१२२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीशाम्भव्यै नमः
१२३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीशारदाऽऽराध्यायै नमः
१२४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीशर्वाण्यै नमः
१२५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीशर्म-दायिन्यै नमः
१२६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीशाङ्कर्यै नमः
१२७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीश्री-कर्यै नमः
१२८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसाध्व्यै नमः
१२९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीशरच्चन्द्र-निभाननायै नमः
१३०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीशातोदर्यै नमः
१३१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीशान्ति-मत्यै नमः
१३२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनिराधारायै नमः
१३३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनिरञ्जनायै नमः
१३४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनिर्लेपायै नमः
१३५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनिर्मलायै नमः
१३६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनित्यायै नमः
१३७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनिराकारायै नमः
१३८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनिराकुलायै नमः
१३९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनिर्गुणायै नमः
१४०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनिष्कलायै नमः
१४१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीशान्तायै नमः
१४२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनिष्कामायै नमः
१४३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनिरुपप्लवायै नमः
१४४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनित्य-मुक्तायै नमः
१४५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनिर्विकारायै नमः
१४६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनिष्प्रपञ्चायै नमः
१४७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनिराश्रयायै नमः
१४८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनित्य-शुद्धायै नमः

१४९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनित्य-बुद्धायै नमः
१५०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनिरवद्यायै नमः
१५१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनिरन्तरायै नमः
१५२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनिष्कारणायै नमः
१५३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनिष्कलङ्कायै नमः
१५४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनिरुपाधये नमः
१५५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनिरीश्वरायै नमः
१५६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनीरागायै नमः
१५७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीराग-मथिन्यै नमः
१५८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनिर्मदायै नमः
१५९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमद-नाशिन्यै नमः
१६०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनिश्चिन्तायै नमः
१६१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनिरहङ्कारायै नमः
१६२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनिर्मोहायै नमः
१६३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमोह-नाशिन्यै नमः
१६४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनिर्ममायै नमः
१६५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीममता-हन्त्र्यै नमः
१६६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनिष्पापायै नमः
१६७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपाप-नाशिन्यै नमः
१६८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनिष्क्रोधायै नमः
१६९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीक्रोध-शमिन्यै नमः
१७०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनिर्लोभायै नमः
१७१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीलोभ-नाशिन्यै नमः
१७२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनिःसंशयायै नमः
१७३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसंशयघ्न्यै नमः
१७४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनिर्भवायै नमः
१७५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीभव-नाशिन्यै नमः
१७६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनिर्विकल्पायै नमः
१७७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनिराबाधायै नमः
१७८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनिर्भेदायै नमः

१७९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीभेद-नाशिन्यै नमः
१८०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनिर्नाशायै नमः
१८१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमृत्यु-मथिन्यै नमः
१८२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनिष्क्रियायै नमः
१८३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनिष्परिग्रहायै नमः
१८४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनिस्तुलायै नमः
१८५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनील-चिकुरायै नमः
१८६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनिरपायायै नमः
१८७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनिरत्ययायै नमः
१८८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीदुर्लभायै नमः
१८९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीदुर्गमायै नमः
१९०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीदुर्गायै नमः
१९१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीदुःख-हन्त्र्यै नमः
१९२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसुख-प्रदायै नमः
१९३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीदुष्ट-दूरायै नमः
१९४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीदुराचार-शमन्यै नमः
१९५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीदोष-वर्जितायै नमः
१९६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसर्वज्ञायै नमः
१९७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसान्द्र-करुणायै नमः
१९८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसमानाधिक-वर्जितायै नमः
१९९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसर्व-शक्ति-मय्यै नमः
२००. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसर्व-मङ्गलायै नमः
२०१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसद्-गति-प्रदायै नमः
२०२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसर्वेश्वर्यै नमः
२०३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसर्व-मय्यै नमः
२०४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसर्व-मन्त्र-स्वरूपिण्यै नमः
२०५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसर्व-यन्त्रात्मिकायै नमः
२०६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसर्व-तन्त्र-रूपायै नमः
२०७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमनोन्मन्यै नमः
२०८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमाहेश्वर्यै नमः

२०९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहा-देव्यै नमः
२१०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहा-लक्ष्म्यै नमः
२११. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमृड-प्रियायै नमः
२१२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहा-रूपायै नमः
२१३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहा-पूज्यायै नमः
२१४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहा-पातक-नाशिन्यै नमः
२१५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहा-मायायै नमः
२१६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहा-सत्त्वायै नमः
२१७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहा-शक्त्यै नमः
२१८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहा-रत्यै नमः
२१९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहा-भोगायै नमः
२२०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहैश्वर्यायै नमः
२२१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहा-वीर्यायै नमः
२२२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहा-बलायै नमः
२२३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहा-बुद्ध्यै नमः
२२४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहा-सिद्ध्यै नमः
२२५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहा-योगेश्वरेश्वर्यै नमः
२२६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहा-तन्त्रायै नमः
२२७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहा-मन्त्रायै नमः
२२८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहा-यन्त्रायै नमः
२२९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहाऽऽसनायै नमः
२३०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहा-याग-क्रमाराध्यायै नमः
२३१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहा-भैरव-पूजितायै नमः
२३२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहेश्वर-महा-कल्प-महा-ताण्डव-साक्षिण्यै नमः
२३३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहा-कामेश-महिष्यै नमः
२३४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः
२३५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीचतुः-षष्ट्युपचाराढ्यायै नमः
२३६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीचतुः-षष्टि-कला-मय्यै नमः
२३७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहा-चतुः-षष्टि-कोटि-योगिनी-गण-सेवितायै नमः
२३८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमनु-विद्यायै नमः

२३९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीचन्द्र-विद्यायै नमः
२४०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीचन्द्र-मण्डल-मध्यगायै नमः
२४१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीचारु-रूपायै नमः
२४२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीचारु-हासायै नमः
२४३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीचारु-चन्द्र-कला-धरायै नमः
२४४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीचराचर-जगन्नाथायै नमः
२४५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीचक्र-राज-निकेतनायै नमः
२४६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपार्वत्यै नमः
२४७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपद्म-नयनायै नमः
२४८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपद्म-राग-सम-प्रभायै नमः
२४९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपञ्च-प्रेतासनासीनायै नमः
२५०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपञ्च-ब्रह्म-स्वरूपिण्यै नमः
२५१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीचिन्मय्यै नमः
२५२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपरमानन्दायै नमः
२५३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीविज्ञान-घन-रूपिण्यै नमः
२५४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीध्यान-ध्यातृ-ध्येय-रूपायै नमः
२५५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीधर्माधर्म-विवर्जितायै नमः
२५६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीविश्व-रूपायै नमः
२५७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीजागरिण्यै नमः
२५८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीस्वपन्त्यै नमः
२५९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीतैजसात्मिकायै नमः
२६०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसुप्तायै नमः
२६१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीप्राज्ञात्मिकायै नमः
२६२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीतुर्यायै नमः
२६३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसर्वावस्था-विवर्जितायै नमः
२६४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसृष्टि-कर्त्र्यै नमः
२६५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीब्रह्म-रूपायै नमः
२६६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीगोप्त्र्यै नमः
२६७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीगोविन्द-रूपिण्यै नमः
२६८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसंहारिण्यै नमः

२६९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीरुद्र-रूपायै नमः
२७०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीतिरोधान-कर्यै नमः
२७१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीईश्वर्यै नमः
२७२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसदा-शिवायै नमः
२७३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीअनुग्रहदायै नमः
२७४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपञ्च-कृत्य-परायणायै नमः
२७५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीभानु-मण्डल-मध्यस्थायै नमः
२७६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीभैरव्यै नमः
२७७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीभग-मालिन्यै नमः
२७८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपद्मासनायै नमः
२७९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीभगवत्यै नमः
२८०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपद्म-नाभ-सहोदर्यै नमः
२८१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीउन्मेष-निमेषोत्पन्न-विपन्न-भुवनावल्यै नमः
२८२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसहस्त्र-शीर्ष-वदनायै नमः
२८३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसहस्त्राक्ष्यै नमः
२८४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसहस्त्र-पादे नमः
२८५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीआब्रह्म-कीट-जनन्यै नमः
२८६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीवर्णाश्रम-विधायिन्यै नमः
२८७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनिजाज्ञा-रूप-निगमायै नमः
२८८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपुण्यापुण्य-फल-प्रदायै नमः
२८९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीश्रुति-सीमन्त-सिन्दूरी-कृत-पादाब्ज-धूलिकायै नमः
२९०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसकलागम-सन्दोह-शुक्ति-सम्पुट-मौक्तिकायै नमः
२९१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपुरुषार्थ-प्रदायै नमः
२९२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपूर्णायै नमः
२९३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीभोगिन्यै नमः
२९४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीभुवनेश्वर्यै नमः
२९५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीअम्बिकायै नमः
२९६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीअनादि-निधनायै नमः
२९७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीहरि-ब्रह्मेन्द्र-सेवितायै नमः
२९८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनारायण्यै नमः

२९९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनाद-रूपायै नमः
३००. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनाम-रूप-विवर्जितायै नमः
३०१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीह्रीङ्कार्यै नमः
३०२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीह्री-मत्यै नमः
३०३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीहृद्यायै नमः
३०४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीहेयोपादेय-वर्जितायै नमः
३०५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीराज-राजार्चितायै नमः
३०६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीराज्ञ्यै नमः
३०७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीरम्यायै नमः
३०८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीराजीव-लोचनायै नमः
३०९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीरञ्जन्यै नमः
३१०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीरमण्यै नमः
३११. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीरस्यायै नमः
३१२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीरणत्-किङ्किणि-मेखलायै नमः
३१३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीरमायै नमः
३१४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीराकेन्दु-वदनायै नमः
३१५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीरति-रूपायै नमः
३१६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीरति-प्रियायै नमः
३१७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीरक्षा-कर्यै नमः
३१८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीराक्षसघ्न्यै नमः
३१९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीरामायै नमः
३२०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीरमण-लम्पटायै नमः
३२१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकाम्यायै नमः
३२२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकाम-कला-रूपायै नमः
३२३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकदम्ब-कुसुम-प्रियायै नमः
३२४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकल्याण्यै नमः
३२५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीजगती-कन्दायै नमः
३२६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकरुणा-रस-सागरायै नमः
३२७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकला-वत्यै नमः
३२८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकलाऽऽलापायै नमः

३२९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकान्तायै नमः
३३०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकादम्बरी-प्रियायै नमः
३३१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीवरदायै नमः
३३२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीवाम-नयनायै नमः
३३३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीवारुणी-मद-विह्वलायै नमः
३३४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीविश्वाधिकायै नमः
३३५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीवेद-वेद्यायै नमः
३३६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीविन्ध्याचल-निवासिन्यै नमः
३३७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीविधात्र्यै नमः
३३८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीवेद-जनन्यै नमः
३३९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीविष्णु-मायायै नमः
३४०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीविलासिन्यै नमः
३४१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीक्षेत्र-स्वरूपायै नमः
३४२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीक्षेत्रेश्यै नमः
३४३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीक्षेत्र-क्षेत्रज्ञ-पालिन्यै नमः
३४४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीक्षय-वृद्धि-विनिर्मुक्तायै नमः
३४५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीक्षेत्रपाल-समर्चितायै नमः
३४६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीविजयायै नमः
३४७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीविमलायै नमः
३४८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीवन्द्यायै नमः
३४९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीवन्दारु-जन-वत्सलायै नमः
३५०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीवाग् -वादिन्यै नमः
३५१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीवाम-केश्यै नमः
३५२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीवह्नि-मण्डल-वासिन्यै नमः
३५३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीभक्ति-मत् -कल्प-लतिकायै नमः
३५४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपशु-पाश-विमोचिन्यै नमः
३५५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसंहृताशेष-पाखण्डायै नमः
३५६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसदाचार-प्रवर्तिकायै नमः
३५७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीताप-त्रयाग्नि-सन्तप्त-समाह्लादन-चन्द्रिकायै नमः
३५८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीतरुण्यै नमः

३५९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीतापसाराध्यायै नमः
३६०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीतनु-मध्यायै नमः
३६१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीतमोऽपहायै नमः
३६२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीचित्यै नमः
३६३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीतत्-पद-लक्ष्यार्थायै नमः
३६४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीचिदेक-रस-रूपिण्यै नमः
३६५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीस्वात्मानन्द-लवी-भूत-ब्रह्माद्यानन्द-सन्तत्यै नमः
३६६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपरायै नमः
३६७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीप्रत्यक्-चिती-रूपायै नमः
३६८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपश्यन्त्यै नमः
३६९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपर-देवतायै नमः
३७०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमध्यमायै नमः
३७१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीवैखरी-रूपायै नमः
३७२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीभक्त-मानस-हंसिकायै नमः
३७३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकामेश्वर-प्राण-नाड्यै नमः
३७४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकृतज्ञायै नमः
३७५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकाम-पूजितायै नमः
३७६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीशृङ्गार-रस-सम्पूर्णायै नमः
३७७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीजयायै नमः
३७८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीजालन्धर-स्थितायै नमः
३७९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीओड्याण-पीठ-निलयायै नमः
३८०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीबिन्दु-मण्डल-वासिन्यै नमः
३८१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीरहो-याग-क्रमाराध्यायै नमः
३८२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीरहस्तर्पण-तर्पितायै नमः
३८३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसद्यः-प्रसादिन्यै नमः
३८४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीविश्व-साक्षिण्यै नमः
३८५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसाक्षि-वर्जितायै नमः
३८६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीषडङ्ग-देवता-युक्तायै नमः
३८७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीषाड्-गुण्य-परि-पूरितायै नमः
३८८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनित्य-क्लिन्नायै नमः

३८९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनिरुपमायै नमः
३९०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनिर्वाण-सुख़-दायिन्यै नमः
३९१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनित्या-षोडशिका-रूपायै नमः
३९२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकण्ठार्ध-शरीरिण्यै नमः
३९३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीप्रभा-वत्यै नमः
३९४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीप्रभा-रूपायै नमः
३९५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीप्रसिद्धायै नमः
३९६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपरमेश्वर्यै नमः
३९७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमूल-प्रकृत्यै नमः
३९८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीअव्यक्तायै नमः
३९९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीव्यक्ताव्यक्त-स्वरूपिण्यै नमः
४००. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीव्यापिन्यै नमः
४०१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीविविधाकारायै नमः
४०२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीविद्याऽविद्या-स्वरूपिण्यै नमः
४०३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहा-कामेश-नयन-कुमुदाह्लाद-कौमुद्यै नमः
४०४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीभक्त-हार्द-तमो-भेद-भानु-मद्-भानु-सन्तत्यै नमः
४०५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीशिव-दूत्यै नमः
४०६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीशिवाराध्यायै नमः
४०७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीशिव-मूर्त्यै नमः
४०८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीशिवङ्कर्यै नमः
४०९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीशिव-प्रियायै नमः
४१०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीशिव-परायै नमः
४११. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीशिष्टेष्टायै नमः
४१२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीशिष्ट-पूजितायै नमः
४१३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीअप्रमेयायै नमः
४१४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीस्व-प्रकाशायै नमः
४१५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमनो-वाचामगोचरायै नमः
४१६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीचिच्छक्त्यै नमः
४१७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीचेतना-रूपायै नमः
४१८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीजड-शक्त्यै नमः

४१९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीजडात्मिकायै नमः
४२०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीगायत्र्यै नमः
४२१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीव्याहृत्यै नमः
४२२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसन्ध्यायै नमः
४२३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीद्विज-वृन्द-निषेवितायै नमः
४२४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीतत्त्वासनायै नमः
४२५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीतस्मै नमः
४२६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीतुभ्यै नमः
४२७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीअय्यै नमः
४२८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपञ्च-कोशान्तर-स्थितायै नमः
४२९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनिःसीम-महिम्ने नमः
४३०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनित्य-यौवनायै नमः
४३१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमद-शालिन्यै नमः
४३२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमद-घूर्णित-रक्ताक्ष्यै नमः
४३३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमद-पाटल-गण्ड-भुवे नमः
४३४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीचन्दन-द्रव-दिग्धाङ्गायै नमः
४३५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीचाम्पेय-कुसुम-प्रियायै नमः
४३६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकुशलायै नमः
४३७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकोमलाऽऽकारायै नमः
४३८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकुरु-कुल्लायै नमः
४३९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकुलेश्वर्यै नमः
४४०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकुल-कुण्डालयायै नमः
४४१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकौल-मार्ग-तत्पर-सेवितायै नमः
४४२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकुमार-गण-नाथाम्बायै नमः
४४३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीतुष्ट्यै नमः
४४४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपुष्ट्यै नमः
४४५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमत्यै नमः
४४६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीधृत्यै नमः
४४७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीशान्त्यै नमः
४४८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीस्वस्ति-मत्यै नमः

४४९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकान्त्यै नमः
४५०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनन्दिन्यै नमः
४५१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीविघ्न-नाशिन्यै नमः
४५२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीतेजो-वत्यै नमः
४५३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीत्रि-नयनायै नमः
४५४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीलोलाक्षी काम-रूपिण्यै नमः
४५५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमालिन्यै नमः
४५६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीहंसिन्यै नमः
४५७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमात्रे नमः
४५८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमलयाचल-वासिन्यै नमः
४५९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसुमुख्यै नमः
४६०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनलिन्यै नमः
४६१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसु-भ्रुवे नमः
४६२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीशोभनायै नमः
४६३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसुर-नायिकायै नमः
४६४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकाल-कण्ठ्यै नमः
४६५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकान्ति-मत्यै नमः
४६६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीक्षोभिण्यै नमः
४६७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसूक्ष्म-रूपिण्यै नमः
४६८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीवज्रेश्वर्यै नमः
४६९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीवाम-देव्यै नमः
४७०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीवयोऽवस्था-विवर्जितायै नमः
४७१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसिद्धेश्वर्यै नमः
४७२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसिद्ध-विद्यायै नमः
४७३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसिद्ध-मात्रे नमः
४७४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीयशस्विन्यै नमः
४७५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीविशुद्धि-चक्र-निलयायै नमः
४७६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीआरक्त-वर्णायै नमः
४७७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीत्रि-लोचनायै नमः
४७८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीखट्वाङ्गादि-प्रहरणायै नमः

४७९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीवदनैक-समन्वितायै नमः
४८०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपायसान्न-प्रियायै नमः
४८१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीत्वक्-स्थायै नमः
४८२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपशु-लोक-भयङ्कर्यै नमः
४८३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीअमृतादि-महा-शक्ति-संवृतायै नमः
४८४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीडाकिनीश्वर्यै नमः
४८५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीअनाहताब्ज-निलयायै नमः
४८६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीश्यामाभायै नमः
४८७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीवदन-द्वयायै नमः
४८८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीदंष्ट्रोज्ज्वलायै नमः
४८९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीअक्ष-मालादि-धरायै नमः
४९०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीरुधिर-संस्थितायै नमः
४९१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकाल-रात्र्यादि-शक्त्यौघ-वृतायै नमः
४९२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीस्निग्धौदन-प्रियायै नमः
४९३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहा-वीरेन्द्र-वरदायै नमः
४९४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीराकिण्यम्बा-स्वरूपिण्यै नमः
४९५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमणि-पूराब्ज-निलयायै नमः
४९६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीवदन-त्रय-संयुतायै नमः
४९७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीवज्रादिकायुधोपेतायै नमः
४९८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीडामर्यादिभिरावृतायै नमः
४९९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीरक्त-वर्णायै नमः
५००. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमांस-निष्ठायै नमः
५०१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीगुडान्न-प्रीत-मानसायै नमः
५०२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसमस्त-भक्त-सुखदायै नमः
५०३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीलाकिन्यम्बा-स्वरूपिण्यै नमः
५०४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीस्वाधिष्ठानाम्बुज-गतायै नमः
५०५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीचतुर्वक्त्र-मनोहरायै नमः
५०६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीशूलाद्यायुध-सम्पन्नायै नमः
५०७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपीत-वर्णायै नमः
५०८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीअति-गर्वितायै नमः

५०९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमेदो-निष्ठायै नमः
५१०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमधु-प्रीतायै नमः
५११. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीबन्धिन्यादि-समन्वितायै नमः
५१२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीदध्यन्नासक्त-हृदयायै नमः
५१३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकाकिनी-रूप-धारिण्यै नमः
५१४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमूलाधाराम्बुजारूढायै नमः
५१५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपञ्च-वक्त्रायै नमः
५१६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीअस्थि-संस्थितायै नमः
५१७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीअंकुशादि-प्रहरणायै नमः
५१८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीवरदादि-निषेवितायै नमः
५१९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमुद्गौदनासक्त-चित्तायै नमः
५२०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसाकिन्यम्बा-स्वरूपिण्यै नमः
५२१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीआज्ञा-चक्राब्ज-निलयायै नमः
५२२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीशुक्ल-वर्णायै नमः
५२३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीषडाननायै नमः
५२४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमज्जा-संस्थायै नमः
५२५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीहंस-वती-मुख्य-शक्ति-समन्वितायै नमः
५२६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीहरिद्रान्नैक-रसिकायै नमः
५२७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीहाकिनी-रूप-धारिण्यै नमः
५२८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसहस्त्र-दल-पद्मस्थायै नमः
५२९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसर्व-वर्णोपशोभितायै नमः
५३०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसर्वायुध-धरायै नमः
५३१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीशुक्र-संस्थितायै नमः
५३२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसर्वतोमुख्यै नमः
५३३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसर्वौदन-प्रीत-चित्तायै नमः
५३४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीयाकिन्यम्बा-स्वरूपिण्यै नमः
५३५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीस्वाहायै नमः
५३६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीस्वधायै नमः
५३७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमत्यै नमः
५३८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमेधायै नमः

५३९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीश्रुत्यै नमः
५४०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीस्मृत्यै नमः
५४१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीअनुत्तमायै नमः
५४२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपुण्य-कीर्त्यै नमः
५४३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपुण्य-लभ्यायै नमः
५४४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपुण्य-श्रवण-कीर्तनायै नमः
५४५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपुलोमजाऽर्चितायै नमः
५४६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीबन्ध-मोचिन्यै नमः
५४७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीबन्धुरालकायै नमः
५४८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीविमर्श-रूपिण्यै नमः
५४९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीविद्यायै नमः
५५०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीवियदादि-जगत्-प्रसवे नमः
५५१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसर्व-व्याधि-प्रशमन्यै नमः
५५२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसर्व-मृत्यु-निवारिण्यै नमः
५५३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीअग्र-गण्यायै नमः
५५४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीअचिन्त्य-रूपायै नमः
५५५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकलि-कल्मष-नाशिन्यै नमः
५५६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकात्यायन्यै नमः
५५७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकाल-हन्त्र्यै नमः
५५८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकमलाक्ष-निषेवितायै नमः
५५९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीताम्बूल-पूरित-मुख्यै नमः
५६०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीदाडिमी-कुसुम-प्रभायै नमः
५६१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमृगाक्ष्यै नमः
५६२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमोहिन्यै नमः
५६३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमुख्यायै नमः
५६४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमृडान्यै नमः
५६५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमित्र-रूपिण्यै नमः
५६६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनित्य-तृप्तायै नमः
५६७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीभक्त-निधये नमः
५६८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनियन्त्र्यै नमः

५६९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनिखिलेश्वर्यै नमः
५७०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमैत्र्यादि-वासना-लभ्यायै नमः
५७१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहा-प्रलय-साक्षिण्यै नमः
५७२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपरा - शक्त्यै नमः
५७३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपरा-निष्ठायै नमः
५७४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीप्रज्ञान-घन-रूपिण्यै नमः
५७५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमाध्वी-पानालसायै नमः
५७६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमत्तायै नमः
५७७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमातृका-वर्ण-रूपिण्यै नमः
५७८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहा-कैलास-निलयायै नमः
५७९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमृणाल-मृदु-दोर्लतायै नमः
५८०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहनीयायै नमः
५८१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीदया-मूर्त्यै नमः
५८२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहा-साम्राज्य-शालिन्यै नमः
५८३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीआत्म-विद्यायै नमः
५८४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहा-विद्यायै नमः
५८५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीविद्यायै नमः
५८६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकाम-सेवितायै नमः
५८७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीषोडशाक्षरी-विद्यायै नमः
५८८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीत्रिकूटायै नमः
५८९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकाम-कोटिकायै नमः
५९०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकटाक्ष-किङ्करी-भूत-कमला-कोटि-सेवितायै नमः
५९१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीशिरः-स्थितायै नमः
५९२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीचन्द्र-निभायै नमः
५९३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीभालस्थायै
५९४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीइन्द्र-धनुः-प्रभायै नमः
५९५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीहृदयस्थायै नमः
५९६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीरवि-प्रख्यायै नमः
५९७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीत्रिकोणान्तर-दीपिकायै नमः
५९८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीदाक्षायण्यै नमः

५९९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीदैत्य-हन्त्र्यै नमः
६००. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीदक्ष-यज्ञ-विनाशिन्यै नमः
६०१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीदरान्दोलित-दीर्घाक्ष्यै नमः
६०२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीदर-हासोज्ज्वलन्मुख्यै नमः
६०३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीगुरु-मूर्तये नमः
६०४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीगुण-निधये नमः
६०५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीगो-मात्रे नमः
६०६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीगुह-जन्म-भुवे नमः
६०७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीदेवेश्यै नमः
६०८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीदण्ड-नीतिस्थायै नमः
६०९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीदहराकाश-रूपिण्यै नमः
६१०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीप्रतिपन्मुख्य-राकान्त-तिथि-मण्डल-पूजितायै नमः
६११. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकलात्मिकायै नमः
६१२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकला-नाथायै नमः
६१३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकाव्यालाप-विमोदिन्यै नमः
६१४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीस-चामर-रमा-वाणी-सव्य-दक्षिण-सेवितायै नमः
६१५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीआदि-शक्त्यै नमः
६१६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीअमेयायै नमः
६१७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीआत्मने नमः
६१८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपरमायै नमः
६१९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपावनाकृतये नमः
६२०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीअनेक-कोटि-ब्रह्माण्ड-जनन्यै नमः
६२१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीदिव्य-विग्रहायै नमः
६२२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीक्लीङ्कार्यै नमः
६२३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकेवलायै नमः
६२४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीगुह्यायै नमः
६२५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकैवल्य-पद-दायिन्यै नमः
६२६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीत्रिपुरायै नमः
६२७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीत्रि-जगद्-वन्द्यायै नमः
६२८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीत्रि-मूर्तये नमः

६२९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीत्रि-दशेश्वर्यै नमः
६३०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीत्र्यक्षर्यै नमः
६३१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीदिव्य-गन्धाढ्यायै नमः
६३२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसिन्दूर-तिलकाञ्चितायै नमः
६३३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीउमायै नमः
६३४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीशैलेन्द्र-तनयायै नमः
६३५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीगौर्यै नमः
६३६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीगन्धर्व-सेवितायै नमः
६३७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीविश्व-गर्भायै नमः
६३८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीस्वर्ण-गर्भायै नमः
६३९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीअवरदायै नमः
६४०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीवागधीश्वर्यै नमः
६४१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीध्यान-गम्यायै नमः
६४२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीअपरिच्छेद्यायै नमः
६४३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीज्ञानदायै नमः
६४४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीज्ञान-विग्रहायै नमः
६४५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसर्व-वेदान्त-संवेद्यायै नमः
६४६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसत्यानन्द-स्वरूपिण्यै नमः
६४७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीलोपा-मुद्रार्चितायै नमः
६४८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीलीला-क्लृप्त-ब्रह्माण्ड-मण्डलायै नमः
६४९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीअदृश्यायै नमः
६५०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीदृश्य-रहितायै नमः
६५१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीविज्ञात्र्यै नमः
६५२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीवेद्य-वर्जितायै नमः
६५३ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीयोगिन्यै नमः
६५४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीयोगदायै नमः
६५५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीयोग्यायै नमः
६५६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीयोगानन्द-युग-धरायै नमः
६५७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीइच्छा-शक्ति-ज्ञान-शक्ति-क्रिया-शक्ति-स्वरूपिण्यै नमः
६५८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसर्वाधारायै नमः

६५९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसु-प्रतिष्ठायै नमः
६६०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसदसद्-रूप-धारिण्यै नमः
६६१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीअष्ट-मूर्त्यै नमः
६६२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीअजायै नमः
६६३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीजैत्र्यै नमः
६६४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीलोक-यात्रा-विधायिन्यै नमः
६६५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीएकाकिन्यै नमः
६६६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीभूम-रूपायै नमः
६६७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनिर्द्वैतायै नमः
६६८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीद्वैत-वर्जितायै नमः
६६९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीअन्नदायै नमः
६७०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीवसुदायै नमः
६७१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीवृद्धायै नमः
६७२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीब्रह्मात्मैक्य-स्वरूपिण्यै नमः
६७३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीवृहत्यै नमः
६७४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीब्राह्मण्यै नमः
६७५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीब्राह्म्यै नमः
६७६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीब्रह्मानन्दायै नमः
६७७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीबलि-प्रियायै नमः
६७८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीभाषा-रूपायै नमः
६७९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीबृहत्-सेनायै नमः
६८०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीभावाभाव-विवर्जितायै नमः
६८१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसुखाराध्यायै नमः
६८२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीशुभ-करण्यै नमः
६८३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीशोभनायै नमः
६८४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसुलभा-गत्यै नमः
६८५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीराज-राजेश्वर्यै नमः
६८६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीराज्य-दायिन्यै नमः
६८७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीराज्य-वल्लभायै नमः
६८८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीराजत्-कृपायै नमः

६८९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीराज-पीठ-निवेशित-निजाश्रितायै नमः
६९०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीराज्य-लक्ष्म्यै नमः
६९१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकोश-नाथायै नमः
६९२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीचतुरङ्ग-बलेश्वर्यै नमः
६९३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसाम्राज्य-दायिन्यै नमः
६९४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसत्य-सन्धायै नमः
६९५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसागर-मेखलायै नमः
६९६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीदीक्षितायै नमः
६९७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीदैत्य-शमन्यै नमः
६९८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसर्व-लोक-वशङ्कर्यै नमः
६९९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसर्वार्थ-दात्र्यै नमः
७००. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसावित्र्यै नमः
७०१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसच्चिदानन्द-रूपिण्यै नमः
७०२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीदेश-कालापरिच्छिन्नायै नमः
७०३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसर्वगायै नमः
७०४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसर्व-मोहिन्यै नमः
७०५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसरस्वत्यै नमः
७०६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीशास्त्र-मय्यै नमः
७०७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीगुहाम्बायै नमः
७०८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीगुह्य-रूपिण्यै नमः
७०९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसर्वोपाधि-विनिर्मुक्तायै नमः
७१०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसदा-शिव-पति-व्रतायै नमः
७११. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसम्प्रदायेश्वर्यै नमः
७१२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसाध्व्यै नमः
७१३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीगुरु-मण्डल-रूपिण्यै नमः
७१४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकुलोत्तीर्णायै नमः
७१५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीभगाराध्यायै नमः
७१६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमायायै नमः
७१७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमधु-मत्यै नमः
७१८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमह्यै नमः

७१९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीगणाम्बायै नमः
७२०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीगुह्यकाराध्यायै नमः
७२१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकोमलाङ्ग्यै नमः
७२२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीगुरु-प्रियायै नमः
७२३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीस्वतन्त्रायै नमः
७२४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसर्व-तन्त्रेश्यै नमः
७२५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीदक्षिणा-मूर्ति-रूपिण्यै नमः
७२५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसनकादि-समाराध्यायै नमः
७२७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीशिव-ज्ञान-प्रदायिन्यै नमः
७२८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीचित्-कलायै नमः
७२९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीआनन्द-कलिकायै नमः
७३०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीप्रेम-रूपायै नमः
७३१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीप्रियङ्कर्यै नमः
७३२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनाम-पारायण-प्रीतायै नमः
७३३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनन्दि-विद्यायै नमः
७३४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनटेश्वर्यै नमः
७३५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमिथ्या-जगदधिष्ठानायै नमः
७३६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमुक्तिदायै नमः
७३७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमुक्ति-रूपिण्यै नमः
७३८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीलास्य-प्रियायै नमः
७३९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीलय-कर्यै नमः
७४०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीलज्जायै नमः
७४१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीरम्भादि-वन्दितायै नमः
७४२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीभव-दाव-सुधा-वृष्ट्यै नमः
७४३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपापारण्य-दावानलायै नमः
७४४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीदौर्भाग्य-तूल-वातूलायै नमः
७४५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीजरा-ध्वान्त-रवि-प्रभायै नमः
७४६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीभाग्याब्धि-चन्द्रिकायै नमः
७४७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीभक्त-चित्त-केकि-घनाघनायै नमः
७४८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीरोग-पर्वत-दम्भोलये नमः

७४९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमृत्यु-दारु-कुठारिकायै नमः
७५०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहेश्वर्यै नमः
७५१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहा-काल्यै नमः
७५२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहा-ग्रासायै नमः
७५३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहाऽशनायै नमः
७५४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीअपर्णायै नमः
७५५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीचण्डिकायै नमः
७५६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीचण्ड-मुण्डासुर-निषूदिन्यै नमः
७५७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीक्षराक्षरात्मिकायै नमः
७५८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसर्व-लोकेश्यै नमः
७५९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीविश्व-धारिण्यै नमः
७६०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीत्रि-वर्ग-दात्र्यै नमः
७६१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसुभगायै नमः
७६२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीत्र्यम्बिकायै नमः
७६३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीत्रि-गुणात्मिकायै नमः
७६४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीस्वर्गापवर्गदायै नमः
७६५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीशुद्धायै नमः
७६६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीजपा-पुष्प-निभाऽऽकृत्यै नमः
७६७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीओजोवत्यै नमः
७६८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीद्युति-धरायै नमः
७६९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीयज्ञ-रूपायै नमः
७७०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीप्रिय-व्रतायै नमः
७७१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीदुराराध्यायै नमः
७७२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीदुराधर्षायै नमः
७७३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपाटली-कुसुम-प्रियायै नमः
७७४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहत्यै नमः
७७५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमेरु-निलयायै नमः
७७६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमन्दार-कुसुम-प्रियायै नमः
७७७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीवीराराध्यायै नमः
७७८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीविराट्-रूपायै नमः

७७९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीविरजसे नमः
७८०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीविश्वतोमुख्यै नमः
७८१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीप्रत्यग्-रूपायै नमः
७८२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपरा-काशायै नमः
७८३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीप्राणदायै नमः
७८४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीप्राण-रूपिण्यै नमः
७८५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमार्तण्ड-भैरवाराध्यायै नमः
७८६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमन्त्रिणी-न्यस्त-राज्य-धुरे नमः
७८७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीत्रिपुरेश्यै नमः
७८८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीजयत्-सेनायै नमः
७८९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनिस्त्रैगुण्यायै नमः
७९०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपरापरायै नमः
७९१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसत्य-ज्ञानानन्द-रूपायै नमः
७९२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसामरस्य-परायणायै नमः
७९३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकपर्दिन्यै नमः
७९४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकला-मालायै नमः
७९५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकाम-धुहे नमः
७९६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकाम-रूपिण्यै नमः
७९७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकला-निधये नमः
७९८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकाव्य-कलायै नमः
७९९ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीरसज्ञायै नमः
८००. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीरस-शेवधये नमः
८०१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपुष्टायै नमः
८०२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपुरातनायै नमः
८०३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपूज्यायै नमः
८०४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपुष्करायै नमः
८०५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपुष्करेक्षणायै नमः
८०६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपरस्मै ज्योतिषे नमः
८०७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपरस्मै धाम्ने नमः
८०८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपरमाणवे नमः

८०९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपरात्परायै नमः
८१०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपाश-हस्तायै नमः
८११. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपाश-हन्त्र्यै नमः
८१२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपर-मन्त्र-विभेदिन्यै नमः
८१३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमूर्तायै नमः
८१४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीअमूर्तायै नमः
८१५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीअनित्य-तृप्तायै नमः
८१६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमुनि-मानस-हंसिकायै नमः
८१७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसत्य-व्रतायै नमः
८१८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसत्य-रूपायै नमः
८१९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसर्वान्तर्यामिण्यै नमः
८२०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसत्यै नमः
८२१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीब्रह्माण्यै नमः
८२२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीब्रह्मणे नमः
८२३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीजनन्यै नमः
८२४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीबहु-रूपायै नमः
८२५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीबुधार्चितायै नमः
८२६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीप्रसवित्र्यै नमः
८२७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीप्रचण्डायै नमः
८२८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीआज्ञायै नमः
८२९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीप्रतिष्ठायै नमः
८३०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीप्रकटाकृतये नमः
८३१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीप्राणेश्वर्यै नमः
८३२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीप्राण-दात्र्यै नमः
८३३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपञ्चाशत्-पीठ-रूपिण्यै नमः
८३४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीविश्रृङ्खलायै नमः
८३५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीविविक्तस्थायै नमः
८३६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीवीर-मात्रे नमः
८३७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीवियत्-प्रसुवे नमः
८३८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमुकुन्दायै नमः

७७९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीविरजसे नमः
७८०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीविश्वतोमुख्यै नमः
७८१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीप्रत्यग्-रूपायै नमः
७८२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपरा-काशायै नमः
७८३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीप्राणदायै नमः
७८४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीप्राण-रूपिण्यै नमः
७८५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमार्तण्ड-भैरवाराध्यायै नमः
७८६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमन्त्रिणी-न्यस्त-राज्य-धुरे नमः
७८७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीत्रिपुरेश्यै नमः
७८८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीजयत्-सेनायै नमः
७८९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनिस्त्रैगुण्यायै नमः
७९०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपरापरायै नमः
७९१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसत्य-ज्ञानानन्द-रूपायै नमः
७९२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसामरस्य-परायणायै नमः
७९३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकपर्दिन्यै नमः
७९४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकला-मालायै नमः
७९५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकाम-धुहे नमः
७९६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकाम-रूपिण्यै नमः
७९७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकला-निधये नमः
७९८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकाव्य-कलायै नमः
७९९ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीरसज्ञायै नमः
८००. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीरस-शेवधये नमः
८०१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपुष्टायै नमः
८०२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपुरातनायै नमः
८०३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपूज्यायै नमः
८०४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपुष्करायै नमः
८०५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपुष्करेक्षणायै नमः
८०६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपरस्मै ज्योतिषे नमः
८०७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपरस्मै धाम्ने नमः
८०८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपरमाणवे नमः

८०९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपरात्परायै नमः
८१०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपाश-हस्तायै नमः
८११. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपाश-हन्त्र्यै नमः
८१२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपर-मन्त्र-विभेदिन्यै नमः
८१३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमूर्तायै नमः
८१४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीअमूर्तायै नमः
८१५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीअनित्य-तृप्तायै नमः
८१६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमुनि-मानस-हंसिकायै नमः
८१७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसत्य-व्रतायै नमः
८१८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसत्य-रूपायै नमः
८१९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसर्वान्तर्यामिण्यै नमः
८२०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसत्यै नमः
८२१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीब्रह्माण्यै नमः
८२२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीब्रह्मणे नमः
८२३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीजनन्यै नमः
८२४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीबहु-रूपायै नमः
८२५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीबुधार्चितायै नमः
८२६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीप्रसवित्र्यै नमः
८२७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीप्रचण्डायै नमः
८२८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीआज्ञायै नमः
८२९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीप्रतिष्ठायै नमः
८३०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीप्रकटाकृतये नमः
८३१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीप्राणेश्वर्यै नमः
८३२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीप्राण-दात्र्यै नमः
८३३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपञ्चाशत्-पीठ-रूपिण्यै नमः
८३४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीविशृङ्खलायै नमः
८३५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीविविक्तस्थायै नमः
८३६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीवीर-मात्रे नमः
८३७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीवियत्-प्रसुवे नमः
८३८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमुकुन्दायै नमः

८३९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमुक्ति-निलयायै नमः
८४०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमूल-विग्रह-रूपिण्यै नमः
८४१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीभावज्ञायै नमः
८४२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीभव-रोगघ्न्यै नमः
८४३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीभव-चक्र-प्रवर्त्तिन्यै नमः
८४४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीछन्दः-सारायै नमः
८४५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीशास्त्र-सारायै नमः
८४६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमन्त्र-सारायै नमः
८४७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीतलोदर्यै नमः
८४८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीउदार-कीर्तये नमः
८४९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीउद्दाम-वैभवायै नमः
८५०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीवर्ण-रूपिण्यै नमः
८५१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीजन्म-मृत्यु-जरा-तप्त-जन-विश्रान्ति-दायिन्यै नमः
८५२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसर्वोपनिषदुद्घुष्टायै नमः
८५३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीशान्त्यतीत-कलात्मिकायै नमः
८५४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीगम्भीरायै नमः
८५५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीगगनान्तःस्थायै नमः
८५६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीगर्वितायै नमः
८५७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीगान-लोलुपायै नमः
८५८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकल्पना-रहितायै नमः
८५९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकाष्ठायै नमः
८६०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीअकान्तायै नमः
८६१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकान्तार्ध-विग्रहायै नमः
८६२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकार्य-कारण-निर्मुक्तायै नमः
८६३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकाम-केलि-तरङ्गितायै नमः
८६४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकनत्-कनक-ताटङ्कायै नमः
८६५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीलीला-विग्रह-धारिण्यै नमः
८६६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीअजायै नमः
८६७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीक्षय-विनिर्मुक्तायै नमः
८६८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमुग्धायै नमः

८६९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीक्षिप्र-प्रसादिन्यै नमः
८७०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीअन्तर्मुख-समाराध्यायै नमः
८७१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीबहिर्मुख-सुदुर्लभायै नमः
८७२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीत्रय्यै नमः
८७३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीत्रिवर्ग-निलयायै नमः
८७४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीत्रिस्थायै नमः
८७५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीत्रिपुर-मालिन्यै नमः
८७६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनिरामयायै नमः
८७७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनिरालम्बायै नमः
८७८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीस्वात्मा-रामायै नमः
८७९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसुधा-स्त्रुत्यै नमः
८८०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसंसार-पङ्क-निर्मग्न-समुद्धरण-पण्डितायै नमः
८८१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीयज्ञ-प्रियायै नमः
८८२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीयज्ञ-कर्त्र्यै नमः
८८३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीयज-मान-स्वरूपिण्यै नमः
८८४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीधर्माधरायै नमः
८८५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीधनाध्यक्षायै नमः
८८६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीधन-धान्य-विवर्धिन्यै नमः
८८७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीविप्र-प्रियायै नमः
८८८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीविप्र-रूपायै नमः
८८९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीविश्व-भ्रमण-कारिण्यै नमः
८९०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीविश्व-ग्रासायै नमः
८९१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीविद्रुमाभायै नमः
८९२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीवैष्णव्यै नमः
८९३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीविष्णु-रूपिण्यै नमः
८९४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीअयोन्यै नमः
८९५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीयोनि-निलयायै नमः
८९६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकूटस्थायै नमः
८९७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकुल-रूपिण्यै नमः
८९८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीवीर-गोष्ठी-प्रियायै नमः

८९९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीवीरायै नमः
९००. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनैष्कर्म्यायै नमः
९०१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनाद-रूपिण्यै नमः
९०२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीविज्ञान-कलनायै नमः
९०३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकल्यायै नमः
९०४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीविदग्धायै नमः
९०५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीवैन्द-वासिन्यै नमः
९०६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीतत्त्वाधिकायै नमः
९०७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीतत्त्व-मय्यै नमः
९०८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीतत्त्वमर्थ-स्वरूपिण्यै नमः
९०९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसाम-गान-प्रियायै नमः
९१०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसौम्यायै नमः
९११. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसदा-शिव-कुटुम्बिन्यै नमः
९१२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसव्यापसव्य-मार्गस्थायै नमः
९१३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसर्वापद्-विनिवारिण्यै नमः
९१४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीस्वस्थायै नमः
९१५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीस्वभाव-मधुरायै नमः
९१६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीधीरायै नमः
९१७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीधीर-समर्चितायै नमः
९१८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीचैतन्यार्घ्य-समाराध्यायै नमः
९१९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीचैतन्य-कुसुम-प्रियायै नमः
९२०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसदोदितायै नमः
९२१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसदा-तुष्टायै नमः
९२२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीतरुणादित्य-पाटलायै नमः
९२३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीदक्षिणाऽदक्षिणाराध्यायै नमः
९२४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीदर-स्मेर-मुखाम्बुजायै नमः
९२५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकौलिनी-केवलायै नमः
९२६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीअनर्घ्य-कैवल्य-पद-दायिन्यै नमः
९२७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीस्तोत्र-प्रियायै नमः
९२८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीस्तुति-मत्यै नमः

९२९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीश्रुति-संस्तुत-वैभवायै नमः
९३०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमनस्विन्यै नमः
९३१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमान-वत्यै नमः
९३२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहेश्यै नमः
९३३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमङ्गलाकृतये नमः
९३४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीविश्व-मात्रे नमः
९३५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीजगद्-धात्र्यै नमः
९३६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीविशालाक्ष्यै नमः
९३७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीविरागिण्यै नमः
९३८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीप्रगल्भायै नमः
९३९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपरमोदारायै नमः
९४०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपराऽऽमोदायै नमः
९४१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमनो-मय्यै नमः
९४२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीव्योम-केश्यै नमः
९४३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीविमानस्थायै नमः
९४४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीवज्रिण्यै नमः
९४५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीवामकेश्वर्यै नमः
९४६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपञ्च-यज्ञ-प्रियायै नमः
९४७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपञ्च-प्रेत-मञ्चाधि-शायिन्यै नमः
९४८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपञ्चम्यै नमः
९४९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपञ्च-भूतेश्यै नमः
९५०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपञ्च-संख्योपचारिण्यै नमः
९५१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीशाश्वत्यै नमः
९५२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीशाश्वतैश्वर्यायै नमः
९५३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीशर्मदायै नमः
९५४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीशम्भु-मोहिन्यै नमः
९५५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीधरायै नमः
९५६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीधर-सुतायै नमः
९५७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीधन्यायै नमः
९५८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीधर्मिण्यै नमः

९५९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीधर्म-वर्धिन्यै नमः

९६०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीलोकातीतायै नमः

९६१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीगुणातीतायै नमः

९६२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसर्वातीतायै नमः

९६३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीशमात्मिकायै नमः

९६४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीबन्धूक-कुसुम-प्रख्यायै नमः

९६५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीबालायै नमः

९६६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीलीला-विनोदिन्यै नमः

९६७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसुमङ्गल्यै नमः

९६८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसुख-कर्यै नमः

९६९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसु-वेषाढ्यायै नमः

९७०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसु-वासिन्यै नमः

९७१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसुवासिन्यर्चन-प्रीतायै नमः

९७२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीआशोभनायै नमः

९७३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीशुद्ध-मानसायै नमः

९७४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीविन्दु-तर्पण-सन्तुष्टायै नमः

९७५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपूर्वजायै नमः

९७६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीत्रिपुराऽम्बिकायै नमः

९७७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीदश-मुद्रा-समाराध्यायै नमः

९७८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीत्रिपुराश्री-वशङ्कर्यै नमः

९७९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीज्ञान-मुद्रायै नमः

९८०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीज्ञान-गम्यायै नमः

९८१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीज्ञान-ज्ञेय-स्वरूपिण्यै नमः

९८२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीयोनि-मुद्रायै नमः

९८३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीत्रिखण्डेश्यै नमः

९८४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीत्रिगुणायै नमः

९८५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीअम्बायै नमः

९८६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीत्रिकोणगायै नमः

९८७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीअनघायै नमः

९८८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीअद्भुत-चरित्रायै नमः

९८९. ॐ ऐं ह्लीं श्रीं श्रीवाञ्छितार्थ-प्रदायिन्यै नमः
९९०. ॐ ऐं ह्लीं श्रीं श्रीअभ्यासातिशय-ज्ञातायै नमः
९९१. ॐ ऐं ह्लीं श्रीं श्रीषडध्वातीत-रूपिण्यै नमः
९९२. ॐ ऐं ह्लीं श्रीं श्रीअव्याज-करुणा-मूर्तये नमः
९९३. ॐ ऐं ह्लीं श्रीं श्रीअज्ञान-ध्वान्त-दीपिकायै नमः
९९४. ॐ ऐं ह्लीं श्रीं श्रीआबाल-गोप-विदितायै नमः
९९५. ॐ ऐं ह्लीं श्रीं श्रीसर्वानुल्लङ्घ्य-शासनायै नमः
९९६. ॐ ऐं ह्लीं श्रीं श्रीश्रीचक्रराज-निलयायै नमः
९९७. ॐ ऐं ह्लीं श्रीं श्रीश्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः
९९८. ॐ ऐं ह्लीं श्रीं श्रीश्रीशिवायै नमः
९९९. ॐ ऐं ह्लीं श्रीं श्रीशिव-शक्त्यैक्य-रूपिण्यै नमः
१०००. ॐ ऐं ह्लीं श्रीं श्रीललिताऽम्बिकायै नमः

अन्त में विनियोग, ऋष्यादि-न्यास, कर-षडङ्ग-न्यास, ध्यान तथा मानस-पूजन पुनः करे। यथा–

।।विनियोगः।।

ॐ अस्य श्रीललिता-सहस्त्र-नाम-स्तोत्र-माला-मन्त्रस्य श्रीवशिन्यादि-वाग्-देवता ऋषयः। अनुष्टुप् छन्दः। श्रीललिताऽम्बा देवता। कएईलह्रीं बीजम्। सकलह्रीं शक्तिः। हसकहलह्रीं कीलकम्। श्रीललिताऽम्बा-प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

।।ऋष्यादि-न्यास।।

श्रीवशिन्यादि-वाग्-देवता-ऋषिभ्यो नमः शिरसि। अनुष्टुप्-छन्दसे नमः मुखे। श्रीललिताऽम्बा देवतायै नमः हृदि। कएईलह्रीं-बीजाय नमः गुह्ये। सकलह्रीं-शक्तये नमः पादयोः। हसकहलह्रीं-कीलकाय नमः सर्वाङ्गे। श्रीललिताऽम्बा-प्रीत्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यास	अङ्ग-न्यास
ऐं कएईलह्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
क्लीं हसकहलह्रीं	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
सौः सकलह्रीं	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ऐं कएईलह्रीं	अनामाभ्यां नमः	कवचाय हुम्
क्लीं हसकहलह्रीं	कनिष्ठाभ्यां नमः	नेत्र-त्रयाय वौषट्
सौः सकलह्रीं	करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

॥ध्यानम्॥

सिन्दूरारुण-विग्रहां त्रि-नयनां माणिक्य-मौलि-स्फुरत्-
तारा-नायक-शेखरां स्मित-मुखीमापीन-वक्षो-रुहाम्।
पाणिभ्यामलि-पूर्ण-रत्न-चषकं रक्तोत्पलं बिभ्रतीम्,
सौम्यां रत्न-घटस्थ-रक्त-चरणां ध्याये परामम्बिकाम्॥

॥मानस पूजन॥

ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीललिताम्बा-प्रीतये समर्पयामि नमः (अधो-मुख कनिष्ठा-अंगुष्ठ)।
ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीललिताम्बा-प्रीतये समर्पयामि नमः (अधो-मुख तर्जनी-अंगुष्ठ)।
ॐ यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीललिताम्बा-प्रीतये घ्रापयामि नमः (ऊर्ध्व-मुख तर्जनी-अंगुष्ठ)।
ॐ रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीललिताम्बा-प्रीतये दर्शयामि नमः (ऊर्ध्व-मुख मध्यमा-अंगुष्ठ)।
ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीललिताम्बा-प्रीतये निवेदयामि नमः (ऊर्ध्व-मुख अनामा-अंगुष्ठ)।
ॐ सं सर्वात्मकं ताम्बूलं श्रीललिताम्बा-प्रीतये समर्पयामि नमः (ऊर्ध्व-मुख सर्वांगुलि)।

इसके बाद प्रार्थना करे-

अनेन श्रीललिता-सहस्त्र-नाम-मन्त्र-जपेन
श्रीराज-राजेश्वरी महा-त्रिपुर-सुन्दरी देवता प्रीयताम्।
॥ॐ तत् सत्॥

***

विशेष

उक्त '**नाम-मन्त्रों**' से पूजन करते समय
प्रत्येक **नाम-मन्त्र** के अन्त में '**नमः**' के स्थान पर '**पूजयामि नमः**' जोड़ना चाहिए।
पूजन के साथ '**तर्पण**' भी करना हो, तो प्रत्येक **नाम-मन्त्र** के अन्त में
'**पूजयामि नमः तर्पयामि नमः**' जोड़ना चाहिए।
'**हवन**' करते समय प्रत्येक **नाम-मन्त्र** के अन्त में
'**नमः स्वाहा**' जोड़ना चाहिए।
'**नाम-मन्त्रों**' से यदि **पूजन** करना हो, तो '**विनियोग**' व '**ऋष्यादि-न्यास**' में
'**जपे विनियोगः**' के स्थान पर '**पूजने विनियोगः**' पढ़ना चाहिए।
यदि **होम** करना हो, तो '**होमे विनियोगः**' पढ़ना चाहिए।

***

श्रीललिता-सहस्त्र-नाम
प्रार्थना, स्तुति एवं व्याख्या

(१) श्रीश्री-माता

'श्री-माता' का साधारण अर्थ–लक्ष्मी की जननी है। श्री-शब्द के साधारण अर्थ इस प्रकार हैं–

(क) 'श्रयति हरिमिति श्री:'–अर्थात् विष्णु भगवान् को श्रेष्ठ बनानेवाली।

(ख) 'श्रीयते सर्वैरिति श्री:'–अर्थात् सब तरह से श्रेष्ठ बनानेवाली।

(ग) 'श्रीयते सर्व: यया सा'–अर्थात् जिससे सभी को श्रेष्ठता प्राप्त होती है।

श्रेष्ठता से यहाँ सच्ची श्रेष्ठता से, जो परम पद की प्राप्ति है, बोध होता है, न कि अपर श्रेष्ठता से, जो दु:ख या बन्धन का कारण मात्र है। जैसा की 'योग वाशिष्ठ' कहता है–

न श्री: सुखाय भगवन्!, दु:खायैव हि वर्द्धते।

लक्ष्मी-पद सरस्वती का भी बोधक है। 'लक्षयति विज्ञापयति इति या सा लक्ष्मी:' अर्थात् दिखलानेवाली या ज्ञान करानेवाली शक्ति। 'व्याडि कोश' भी कहता है कि–

लक्ष्मी सरस्वती धी त्रि-वर्ग-सम्पद्-विभूति-शोभासु........।

वेद के इस वचन–'श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्या:' से भी यह बोध होता है कि 'श्री' और 'लक्ष्मी' में किञ्चित् भेद है, जब हम 'लक्ष्मी' शब्द का अर्थ धन या सम्पत्ति-दायिका शक्ति समझते हैं।

वस्तुत: यहाँ 'श्री' का प्रयोग सरस्वती या वाक्-शक्ति या शब्द-ब्रह्म के अर्थ में किया गया है। इस प्रकार 'श्री-माता' का अर्थ शब्द-ब्रह्म का वीज (जननी) परं-ब्रह्म परमात्मा या चित्-परा-शक्ति है। इसी को परं-ब्रह्म इत्यादि नामों से पुकारते हैं।

'योग-वाशिष्ठ' (नि० प्र० पू० ७८-३४) कहता है कि–

सा ब्रह्म परमात्मादि-नामाभि: परिगीयते।

अर्थात् वह ब्रह्म–परमात्मा आदि नामों से पुकारी जाती है।

यहाँ 'श्री-माता', 'श्री-महा-राज्ञी' और 'श्रीमत्-सिंहासनेश्वरी'–ये तीनों नाम इसी भाव के समर्थक व ब्रह्म-प्रतिपादक हैं।

'गीता' के "अहं सर्वस्य प्रभवो', 'अहमादिश्च','सर्गाणामादि:', 'यच्चापि सर्व-भूतानां वीजं तदहमर्जुन'–इत्यादि वचन 'माता' शब्द का ही प्रतिपादन करते हैं। श्रुति-कथित ब्रह्म-योनि का द्योतक ही यहाँ 'माता' शब्द है।

'मातृ' शब्द का अर्थ ही है–परिच्छेद से ब्रह्म के 'त्रयी-रूप' का बोध करानेवाली–

ब्रह्मणे त्रयीं माति, परिच्छेदेन बोधयति।

इसी भाव को 'योग-वाशिष्ठ' ने इन शब्दों में व्यक्त किया है–

तयेषा चेत्येतच्चिच्छ्रीः, सैषाऽऽद्या चिदिति स्मृता।

अर्थात् इसी अनुपहित चेतना से चेतना-श्री में चैतन्य होता है। यही आद्या-चित् अर्थात् चित्-परा कही जाती है।

'त्रयी' के एकाधिक तात्पर्य हैं। **'त्रयी'** अर्थात् ब्रह्म के तीन रूप हैं–१. अपरिणामिनी, २. सम-परिणामिनी और ३. विषम-परिणामिनी अर्थात् शुद्ध चित्-स्वरूप, मिश्र चित् और अचित्-स्वरूप। **'त्रयी'** से ध्यान-विन्दूपनिषत् में कथित् त्रि-ब्रह्म का भी तात्पर्य हो सकता है। इससे आत्मा, अन्तरात्मा और परमात्मा का भी बोध हो सकता है और अरूप, शब्द-रूप व विश्व-रूप–'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' का भी बोध हो सकता है।

यहाँ **'श्री-माता'** से विश्व-बीज या विश्व-रूपी कार्य के कारण का ही तात्पर्य है, जिसको 'श्रुति'–'यतो इमानि भूतानि जायन्ते' अर्थात् जिससे इन सभी प्राणियों का जन्म होता है–कहकर प्रतिपादन करती है। यह परा-शक्ति (पर-ब्रह्म) के प्रथम गुण सृजन-शक्ति का द्योतक है।

'श्री-माता' से श्री षोडशी विद्या के त्रि-कूट के प्रथम कूट का उद्धार होता है।

◆◆प्रार्थना◆◆

त्रैलोक्य-रक्षण के लिए जिस पराम्बा ने अपनी कला से 'लक्ष्मी' को प्रकट किया और स्वयं ही कृपा कर 'विष्णु' को प्रदान किया, जो पराम्बा सभी श्रियों का आधार है, वे श्रीमाता ललिता अम्बिका भगवती सदैव मेरा कल्याण करती रहें।

***

(२) श्रीश्री-महा-राज्ञी

'श्री-महा-राज्ञी' शब्द, महाराज शब्द से न बनकर मध्यम पद समास का लोप कर राजा से बनता है। इससे **'श्री-विद्या'** के त्र्यक्षर मन्त्र का उद्धार होता है।

'राज्ञी' का अर्थ है–पालन या रक्षण करनेवाली। 'श्रुति' इसे 'येन जातानि जीवन्ति' कहकर धर्मी शक्ति (ब्रह्म) की पालिका शक्ति के रूप में प्रतिपादित करती है। 'श्रुति' के इस वचन से और भी स्पष्ट है–सर्वस्याधिपति''एष भूताधिपतिरेष भूत-पाल (वृहदारण्यक, ४/४)।

इस प्रकार **'राज्ञी'** का अर्थ अधि-पति है। इसी से शास्त्रों का सिद्धान्त है–ब्रह्मणो लिङ्गं हि त्रैलोक्य-रक्षणम् (पालनम्)।' 'वैकृतिक रहस्य' के अनुसार इसका अर्थ 'सर्व-लोक-महेश्वरी' है।

◆◆प्रार्थना◆◆

समस्त देवों से द्वेष करनेवाले भण्डासुर को जिसने सदल बल-विनष्ट कर दिया तथा देवों को जिसने शासन करना सिखाया, वह सर्वादि-भूता श्री-महा-राज्ञी ललिताम्बिका मेरे हृदय में प्रकाशित होती रहें।

***

(३) श्रीश्रीमत्-सिंहासनेश्वरी

'**श्रीमत्-सिंहासनेश्वरी**' का वाच्यार्थ है–**सिंहासन** अर्थात गद्दी की स्वामिनी। इसका सामान्य अर्थ है–सिंह-वासिनी। '**सिंह**' का रहस्यार्थ '**सप्तशती**' के '**वैकृतिक रहस्य**' के अनुसार–**नि:शेष धर्म**-रूप और आठों **ऐश्वर्य**-सम्पन्न गुण है। इस आधार पर **सिंह-वासिनी** से **अष्टैश्वर्य**-**शक्ति**-युता और नि:शेष धर्मी शक्ति को रखनेवाली '**धर्मी शक्ति**' का बोध होता है।

'**श्रीमत्**' अर्थात् **श्रेष्ठ सिंहासन** का दूसरा तात्पर्य है–१. **ब्रह्मा**, २. **विष्णु**, ३. **रुद्र**, ४. **ईश्वर** और ५. सदा-शिव–इन **पञ्च-महा-भूताधिष्ठातृ ईश्वरों** का आसन, जिस पर समस्त **प्रपञ्चेश्वरी** (**विश्वेश्वरी**) बैठी हैं।

यहाँ '**सिंह**' शब्द का लक्ष्यार्थ या सूक्ष्मार्थ हिंसार्थक भी है। **वैयाकरण** लोग कहते हैं–

हिंसि-धातोः सिंह शब्दो, वश-कान्तौ शिवः स्मृतः।
वर्ण-व्यत्ययतः सिद्धौ, पश्यकः कश्यप यथा।।

अर्थात् जिस प्रकार '**पश्यक**' शब्द का वर्ण बदल जाने पर '**कश्यप**' शब्द होता है, उसी प्रकार '**सिंह**' शब्द का वर्ण-व्यत्यय करने से '**हिंसः**' शब्द होता है, जिसका अर्थ **संहार**-द्योतक है। इस प्रकार यहाँ प्रकरण-वश युक्त अर्थ है–**संहार** या **लय-गुण-सम्पन्ना**। यह **ब्रह्म** की ही लक्षणा है–'**यत् त्रयत्यभिसंविशन्ति**' (श्रुति)।

अतः '**श्री-माता**', '**श्री-महा-राज्ञी**' और '**श्रीमत्-सिंहासनेश्वरी**'–इन तीनों नामों से **सृजन, पालन** और **लय** इन तीनों **धर्म-शक्तियों** का बोध होता है, जो एक ही में रहने से **पूर्ण ब्रह्म** की निदर्शिका हैं।

◆◆प्रार्थना◆◆

शौर्य और वीर्य में सर्वोत्कृष्ट सिंह को जिसने अपना आसन बनाया है, वे श्रीमत्-सिंहासनेश्वरी भगवती ललिता प्रति-दिन मुझे सभी प्रकार के अभीष्ट देनेवाली होवें।

***

(४) श्रीचिदग्नि-कुण्ड-सम्भूता

'**चिदग्नि**' का अर्थ है '**चित्-अग्नि**', जो भूत-अग्नि से भिन्न है। जिस प्रकार **चिदाकाश**–भूताकाश से परे है, **संविदग्नि** है। यहाँ संवित् से **परा-संवित्** का ही बोध होता है। इसके **कुण्ड** अर्थात् **योनि** (**मातृ-योनि**) से प्रकट होनेवाली **उन्मनी** और **समनी** दो शक्तियाँ हैं, जो कि **शक्ति** और **शिव** तत्त्व-द्वय की बोधक हैं। इसके प्रादुर्भाव का कारण '**देव-कार्य-समुद्यता**' नाम से स्पष्ट होता है।

◆◆प्रार्थना◆◆

सभी देव समुदाय के द्वारा आह्वान कर बुलाई गई, चिदग्नि-कुण्ड से प्रकट होनेवाली विश्व-जननी माता 'चिदग्नि-कुण्ड-सम्भूता' का मैं आश्रय करता हूँ।

***

(५) श्रीदेव-कार्य-समुद्यता

इस पद का अर्थ है–देवताओं के कार्य को करने के लिए सम्यक् प्रकार से उद्यता अर्थात् देवताओं का काम करने के निमित्त ही अपने को प्रकट करती हैं। देव-कार्य है–धर्म-संस्थापन अर्थात् असत् और सत् का साम्य-स्थापन। कारण आदि में असत् था, देखिए–तैत्तिरीयोपनिषत् श्रुति–'असद्वा इदमग्र आसीत्। ततो वै सदजायत्।।'

यहाँ सत् और असत् का निर्विशेष अर्थात् अपरिच्छिन्न या देश-काल-परिच्छेद-रहित और सविशेष अर्थात् देश-काल-परिच्छेद के सहित–दोनों से तात्पर्य है।

अतः '**श्रीललिता-सहस्त्र-नाम**' के पहले पद में **भगवती सुन्दरी** का **पर-रूप** और पद्योक्त शब्दों में सूक्ष्म या मन्त्र-रूप कूटस्थ भाव से वर्णित है।

भगवती के विशिष्ट स्थूल रूप **कर-चरणादि** का वर्णन द्वितीय पद्य द्वारा किया गया है। इन रूपों की उपयोगिता साधन-भेद पर निर्भर करती है। '**योग-वाशिष्ठ**' के अनुसार स्थूल-रूप के उपासक मूढ़ नहीं कहे जा सकते। **पूजा** को **निदिध्यासन** का रूप देकर **पूजा-परायण** होने से '**समाधि**' या '**ब्रह्मैक्य**' प्राप्त होता है।

◆◆प्रार्थना◆◆

कोमल अन्तःकरणवाली माता की तरह जो देव-कार्य के लिए उद्यता हैं, वे सर्व-समर्थ जगदीश्वरी मेरा मङ्गल करें।

***

(६) श्रीउद्यद्-भानु-सहस्त्राभा

'**उद्यद्-भानु-सहस्त्राभा**' का अर्थ है–सहस्त्र अर्थात् असंख्य उदय-कालिक सूर्यों के सदृश वर्णवाली। इसका यह तात्पर्य है कि **भगवती ललिता–प्रकाश-शक्ति** होती हुई भी अपनी **विमर्श-शक्ति** भी हैं। '**भानु-सहस्त्राभा**' से **परम ज्योति** का बोध होता है। **ब्रह्म** का ऐसा ही वर्ण है। '**गीता**' (११/१२) में स्वयं भगवान् **कृष्ण** ने अपने पूर्ण स्वरूप का ऐसा वर्णन किया है–

दिवि सूर्य - सहस्त्रस्य, भवेद् युगपदुत्थिता।
यदि भाः सदृशी सा स्याद्, भासस्तस्य महात्मनः।।

अर्थात् आकाश में एक ही समय हजारों सूर्य मिल कर उदित हों, तब जो आभा होगी, वही **परमात्मा की कान्ति** है। इसी का श्रुति ने–'**तच्छुभ्रं ज्योतिषां ज्योतिः**' आदि वचनों से प्रतिपादन किया है।

'**उद्यत्**' से **लौहित्य** अर्थात् लाल का भी बोध होता है। यह **विमर्श-शक्ति** का बोधक होता है। **रक्त-वर्ण–अनुराग-व्यञ्जक** होता है। **अनुराग** ही **विमर्श** का कारण होता है। इसीलिए श्रुति कहती है–

'लौहित्यमेतस्य सर्वस्य विमर्शः' (भावनोपनिषत्)।

'विमर्श' को अनुसन्धान कहते हैं। इसी हेतु देवी-निष्ठ अनुसन्धान या विमर्श का व्यञ्जक लौहित्य अर्थात् सूर्य की लाली है।

◆◆प्रार्थना◆◆

हे जगदम्ब! आप हजारों सूर्यों की प्रभा के समान लाल-लाल कान्ति के रूप में रात-दिन हमारे ध्यान में रहें।

***

(७) श्रीचतुर्बाहु-समन्विता,

(८) श्रीराग-स्वरूप-पाशाढ्या,

(९) श्रीक्रोधाकारांकुशोज्ज्वला,

(१०) श्रीमनो-रूपेक्षु-कोदण्डा,

(११) श्रीपञ्च-तन्मात्र-सायका

'चतुर्बाहु-समन्विता' का अर्थ है कि देवी चार भुजावाली हैं, जिनमें **'राग'**-रूपी पाश, **'क्रोध'**-रूपी चमकीला अंकुश, **'मन'**-रूपी इक्षु-दण्ड (ईख का धनुष) और **'पाँच तन्मात्रा'**-रूपी पाँच बाण हैं। इन्हीं चारों आयुधों से प्रपञ्चेश्वरी प्रपञ्च बनाए रखती हैं और इन्हीं चारों आयुधों से मुक्ति की चारों बाधाओं—१. लय, २. विक्षेप, ३. कषाय और ४. रसास्वाद को दूर करती हैं। ये विघ्न-चतुष्टय-निर्विकल्प समाधि के बाधक हैं। इन चारों विघ्नों की परिभाषाएँ इस प्रकार हैं—

(अ) लय—चित्त की खण्डाकार-वृत्ति को अर्थात् पूर्ण द्वैत-भाव की निष्क्रिय व्यवस्था को **'लय'** कहते हैं। दूसरे शब्दों में चित्त की जड़ता ही **'लय'** है। यह **'लय'** या जड़ता दो प्रकार की होती है—(१) वाञ्छित या इष्ट, (२) अवाञ्छित या अनिष्ट। प्रथम कल्याण-कारी और दूसरी अकल्याण-कारी है। यही दूसरी विघ्न-स्वरूपा है। प्रथम है—परमानन्द में चिर-काल—अनेक जन्मों में अष्टाङ्ग-सहित निर्विकल्पक समाधि के अभ्यास से लय। दूसरा है—मूर्च्छावस्था, आलस्य-वश स्तब्धी-भाव का लक्षण निद्रा-रूप।

(ब) विक्षेप या राग—विषयों में राग, जो चित्त की बहिर्मुखी वृत्ति है, **'विक्षेप'** है।

(स) कषाय—अखण्डाकार वस्तु के ग्रहण में प्रवृत्ति होने पर पूर्व-जन्मार्जित कु-संस्कारों से जो स्तब्धी-भाव उत्पन्न होता है, उसे **'कषाय'** कहते हैं। दूसरे शब्दों में सजातीय प्रवाह (अर्थात् सब कुछ मेरा ही अंश है) को भङ्ग कर देनेवाला विघ्न **'कषाय'** है।

(द) रसास्वाद—चित्त-वृत्ति की अन्तर्मुखता के हटने से जो आनन्द होता है, उसे **'रसास्वाद'** कहते हैं। यह ब्रह्मानन्द या अन्तर्मुखी आनन्द से भिन्न है। अतएव ब्रह्मानन्द की प्राप्ति में बाधा करता है।

'**उत्तर-चतुःशती**' के अनुसार '**पाश**'–इच्छा-शक्ति, '**अंकुश**'–ज्ञान शक्ति और '**धनुष**' तथा बाण–क्रिया-शक्ति के द्योतक हैं। बात एक ही है।

राग से बन्धन है और **अनुराग** से मुक्ति है। **राग** या **वासना** ही इच्छा-शक्ति है।

ज्ञान अकुंश का काम करता है, इससे महा-बलवान् हाथी को भी वश में रख कर ठीक रास्ता दिखाया जाता है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि ज्ञान-रूपी चञ्चल हाथी को भी वश में कर ठीक रास्ते पर रखता है।

इक्षु-धनुष–मन का द्योतक है, जो सर्वदा **सङ्कल्प-विकल्प** करता ही रहता है और अपने सङ्कल्पों के अनुसार वाणों अर्थात् वृत्तियों के द्वारा कर्म करता ही रहता है। यह कभी चुप नहीं बैठ सकता। '**गीता**' भी कहती है–'**नहि कश्चित् क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्म-कृत् ।**'

अतएव **शर** और **धनुष–क्रिया-शक्ति** के द्योतक हैं। **वाणों** की संख्या पाँच ही है। इनसे **पञ्च-तन्मात्रात्मक क्रिया-शक्ति** का स्पष्ट बोध होता है। इन **वाणों** का स्थूल रूप पुष्प है, सूक्ष्म रूप **मन्त्रात्मक** है और पर-रूप **वासनात्मक** है। इन्हीं **वासनात्मक वाणों** को काम-विवर्जित **शुद्ध मन** पर चढ़ाकर **परम लक्ष्य का वेध** किया जाता है। इसी भाव को **श्रुति (मुण्डकोपनिषद्** २।२।३) इस प्रकार व्यक्त करती है–

धनुर्गृहीत्वौपनिषदं महास्त्रं शरं हि उपासि निशितं सन्दधीत।
आयम्य तद्-भाव-गतेन चेतसा लक्ष्यं तदेवाक्षरं सौम्य! विद्धि।

उक्त आयुधों से **पराम्बा षोडशी भगवती** प्रपञ्च भी करती हैं और अपने **सच्चे भक्तों** को मुक्ति भी प्रदान करती रहती हैं।

'**कालिका पुराण**' में इन **पाँचों पुष्प-वाणों** को–**१. हर्षण, २. रोचन, ३. मोहन, ४. शोषण** और **५. मारण** कहा गया है। '**ज्ञानार्णव**' में–**१. क्षोभण, २. द्रावण, ३. कर्षण, ४. वश्य** और **५. उन्माद** कहा गया है। '**तन्त्र-राज**' में इन्हें–**१. मादन, २. उन्मादन, ३. मोहन, ४. दीपन** और **५. शोषण** कहा है।

◆◆प्रार्थना◆◆

हे मातः! धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष–चारों पुरुषार्थों को प्रदान करने के लिए चार भुजावाली होकर हमारे ऊपर कृपा करो।

हे देवि! स्वतः फैलनेवाले 'राग' पर विजय प्राप्त करने के लिए 'राग-स्वरूप-पाशाढ्या' होकर आप हमारे हृदय में विराजें।

हे देवि! संसार में 'क्रोध'–अंकुश जैसा कुटिल और तीखा है। जो 'क्रोध' का सहारा लेते हैं, उन्हें यह तीखा बना देता है। 'क्रोध' सदा वश में रहे, इसलिए आप क्रोधाकारांकुश से समुज्ज्वल होकर हमारे हृदय में विराजें।

हे देवि! प्रपञ्च के जाल से निर्मुक्त होने के लिए मन-रूपी ईख के धनुषवाली होकर आप हमारे हृदय में विराजें।

हे मन! हे मित्र! यदि जगत् का मूल कारण शीघ्र जानना चाहते हो, तो जिसके हाथ में पञ्च-तन्मात्राओं के पाँच बाण हैं, उन महा-माया श्रीललिताम्बा की शरण प्राप्त करो और उनका ध्यान करो, उनको ही पूजो।

***

(१२) श्रीनिजारुण-प्रभापूर-मज्जद्-ब्रह्माण्ड-मण्डला

'**निजारुण**' का अर्थ है कि **देवी** अपनी ही **रक्तिम (लाल) कान्ति** के प्रवाह में ओत-प्रोत **ब्रह्माण्ड-मण्डल-स्वरूपा** हैं। '**निज**' से स्व-जातीय भाव का बोध होता है। यह शब्द **वेदान्त** के सिद्धान्त '**सर्वं खल्विदं ब्रह्म**' तथा '**ब्रह्म-व्यतिरिक्तं सर्वं बाधितमेव**' का समर्थन करता है। **कारण और कार्य का अभेदत्व** सिद्ध करता है।

'**योग-वाशिष्ठ**' (उत्पत्ति प्र० ३।२८) का भी यही कहना है–

यादृशं कारणं शुद्धं, कार्यं तादृगिति स्थितम्।
यादृगेव परं-ब्रह्म, तादृगेव जगत्-त्रयम्।।

'**अरुण**' शब्द **लाल रजो-गुण** का द्योतक है, जो **सृजन** का मूल तत्त्व है। इसी से प्रातःकालिक **सौभाग्यादि-न्यास** में ऐसा ध्यान है। इसी **रजो-गुण** के प्रवाह में सारा **ब्रह्माण्ड-मण्डल** मज्जन करता हुआ दीप्तिमान है। ऐसा '**योग-वाशिष्ठ**' भी कहता है–

यस्य चिन्मात्र-दीपस्य, भासा भाति जगत्-त्रयम्।

उक्त नाम का लक्ष्यार्थ **विश्व-रूपिणी** है। इसी **नित्य सत्ता** (विश्व-रूपिणी) का दूसरा **नाना आकृति-रूप** है, जो कि इसके **अरुण-प्रभा** या तेज से सृष्ट है (**योग-वाशिष्ठ**)–

द्वे रूपे तत्र सत्तायां, एकं नानाकृति-स्थितिम्।
संविन्मात्रादुदेत्येषा, प्राकाश्यमिव तेजसः।।

प्रपञ्चेश्वरी इसी तैजस-प्रवाह में **ब्रह्माण्ड-मण्डल** को नचाती रहती हैं–'**आत्मैवाद्य-विलासिन्या, जगन्नाट्यं प्रनृत्यति**' अर्थात् विलास करनेवाली **आद्या शक्ति** से आत्मा ही संसार-रूपी नाटक करती है। अतः **ब्रह्माण्ड-मण्डल** को **भगवती** से भिन्न न समझना ही उचित है। यह स्वयं **ब्रह्माण्ड-मण्डल** या **विश्व-रूपिणी** हो नृत्य करती हुई अपने ही द्रष्टा (देखनेवाले स्वरूप) को आनन्दित करती है। दूसरे शब्दों में अपने को ही आनन्द देने के लिए **विश्व-रूप** धारण करती है। यह होता है **माया** से अर्थात् बन्धन से।

◆◆प्रार्थना◆◆

हे मन! जिन भगवती के शरीर की प्रभाओं से सारा ब्रह्माण्ड व्याप्त हो रहा है, उसे ध्याओ, उसे पूजो।

***

(१३) श्रीचम्पकाशोक-पुन्नाग-सौगन्धिक-लसत्-कचा

'चम्पकाशोक-पुन्नाग-सौगन्धिक-लसत्-कचा' का स्थूलार्थ है कि देवी के केश चम्पा, अशोक और पुन्नाग–इन तीन सुगन्धित पुष्पों से आभूषित हैं। सूक्ष्मार्थ रूप में इन तीनों से यहाँ त्रिगुण–सत्त्व, रजो और तमो-गुण का तात्पर्य है। इसी त्रिगुणात्मक सुगन्धित अर्थात् त्रि-तत्त्व से 'कचा' (वेणी) बँधी है। इससे यही बोध होता है कि भगवती अपने को त्रि-गुणात्मक कर विश्व-रूप धारण करती हैं। 'योग-वाशिष्ठ' (नि० प्र० पूर्वार्ध ९४/७०) ऐसा ही कहता है–

तस्माच्चिदात्मक-तयाऽऽत्मनि चित्ततोऽयं, नित्यं स्वयं कचति भूमिप-देव-देवः।
तेनैव पद्मजं इति स्वयमात्मनाऽऽत्मा, प्रोक्तः स्वरूप इति शान्तमिदं समस्तम्।।

इसी भाव को निम्न पद्य में स्पष्ट रूप से व्यक्त किया गया है–

आच्छाद्य विक्षिपति संस्फुरदात्म - रूपं। जीवेश्वरत्व जगदाकृतिभिर्मृषैव।।
अज्ञानमावरण - विभ्रम - शक्ति - योगादात्मत्व - मात्र - विषयाश्रयतावलेन।।

◆◆प्रार्थना◆◆

चम्पा (पीले), अशोक (लाल) सुगन्धित कमल पुष्पों से सुशोभित केशोंवाली श्रीललिताम्बा की वेणी मेरा कल्याण करनेवाली होवे।

***

(१४) श्रीकुरविन्द-मणि-श्रेणी-कनत्-कोटीर-मण्डिता

'कुरविन्द'–रक्त-कमल को कहते हैं। अरविन्द सब प्रकार के श्वेत, नील आदि कमलों को कहते हैं। इस शब्द के प्रयोग से अनेक अन्तस्तात्पर्य निकलते हैं। कुरविन्द मणि–पद्म-राग मणि है अर्थात् पद्म के सदृश राग या आभा जिसकी है। इस मणि की उत्पत्ति स्फटिक से होती है, जैसा **'गरुड़ पुराण'** कहता है–**'सौगन्धिकोत्थाः कुरुविन्दजाश्च, महा-गुणाः स्फाटिक-संप्रसूताः।'**

इस प्रकार यह शब्द काम, अनुराग आदि गुणों का द्योतक है–**'कामानुराग कुरुविन्दजेषु, शनैर्न तादृक् स्फटिकोद्भवेषु।'**

अतः इन रत्नों की पंक्तियों से दीप्त मुकुट से भूषिता का आध्यात्मिक अर्थ यह है कि त्रि-गुण-मयी प्रपञ्चेश्वरी कामेश्वरी–राग या राजस् गुणों से अपमे को दीप्ति कर विश्व-रूप धारण कर रही हैं।

◆◆प्रार्थना◆◆

पद्म-राग मणि से दीप्यमान मुकुट से शोभित श्रीराज-राजेश्वरी ललिता महा-राज्ञी मुझे भी शोभा और सम्पदाएँ देवें।

***

(१५) श्रीअष्टमी-चन्द्र-विभ्राजदलिक-स्थल-शोभिता

'**अष्टमी-चन्द्र-विभ्राजदलिक-स्थल-शोभिता**' का अर्थ है कि देवी का ललाट **अष्टमी** तिथि के चन्द्र से शोभित है। यहाँ **अष्टमी**-शब्द रहस्य-मय है क्योंकि और-और स्थानों में व और-और ब्रह्म-रूपिणी महा-विद्याओं के स्वरूप-वर्णन में बाल-चन्द्र अर्थात् द्वितीया के चन्द्र का उल्लेख होता है। इस भगवती को भी '**बालेन्दु-भृच्छेखराम्**' कहा गया है।

इस अवस्था में यहाँ **अष्टमी-द्योतक तरुण** के प्रयोग का तात्पर्य यह है कि **अष्टमी** तिथि में चन्द्र आधा रहता है। **सृष्टि-क्रम** से वृद्धि करता है और **संहार-क्रम** से घटता हुआ विलीन होता है। इस **अर्द्ध-चन्द्र** का प्रयोग **निर्वाणाख्य** कला के भाव में प्रथमा आदि महा-विद्या (काली व तारा) के विषय में किया गया है। '**त्रिपुरा-सार-समुच्चय**' इस सम्बन्ध में कहता है-

एतस्याः परतः स्थिता भगवती भूताधि - देवाधिपा।
निर्वाणाख्य-कलार्ध-चन्द्र - कुटिला सा षोडशान्तर्गता।।

◆◆प्रार्थना◆◆

अष्टमी के अर्ध-चन्द्र से शोभित ललाट व प्रसन्न मुखवाली कामेश्वरी भगवती मेरे अन्तर्गत विराजमान तम अर्थात् अन्धकार-अज्ञान और तमो-गुण को दूर करें।

***

(१६) श्रीमुख-चन्द्र-कलङ्काभ-मृग-नाभि-विशेषका

'**मुख-चन्द्र-कलङ्काभ-मृग-नाभि-विशेषका**' अर्थात् चन्द्र-सदृश मनोज्ञ मुख-मण्डल में **कलङ्क**-समान कस्तूरी का टीका। यहाँ उपमा-उपमेय भाव है। चन्द्र और **कलङ्क** में तथा शुद्ध **स्फटिक सदृश शिव** और **हालाहल-प्रयुक्त नीलिमा कण्ठ** में जिस प्रकार का नित्य अविना-भाव सम्बन्ध है, उसी प्रकार चित् और अचित् में अविना-भाव सम्बन्ध है। इस सम्बन्ध को नीर-क्षीर के सदृश संयोग सम्बन्ध भी कह सकते हैं। यह नित्य सम्बन्ध है।

◆◆प्रार्थना◆◆

हे मन! भक्तों के चित्त-रूप चकोरों के विश्वास के लिए जो भगवती श्रीललिता अपने विशुद्ध मुख पर चन्द्र के कलङ्क के समान कस्तूरी का तिलक धारण करती हैं, उनका भजन करो।

***

(१७) श्रीवदन-स्मर-माङ्गल्य-गृह-तोरण-चिल्लिका

'**वदन-स्मर-माङ्गल्य-गृह तोरण-चिल्लिका**' का अर्थ है कि देवी का मुख **कामेश्वर** के कल्याण-मय भवन की झूलती हुई तोरण के समान है। इससे **कामेश्वर** और **कामेश्वरी** (ललिता) का अभेदत्व सिद्ध होता है-

परं शम्भु वन्दे परिमिलित-पार्श्व-परचिता।

'वदन' का अर्थ है–मुख। 'स्मर-माङ्गल्य' (कामेश्वर का कल्याण-मय भवन) का गहरा आध्यात्मिक अर्थ है। यह भी लोक है, जो परम धाम है और परम कल्याण का देनेवाला है, जहाँ परा भाव है। इसी का बिम्ब भ्रू-युगल का मध्य स्थान 'आज्ञा-चक्र' है, जहाँ पश्यन्ती भाव है (शब्द या नाद चार प्रकार के हैं–१. परा, २. पश्यन्ती, ३. मध्यमा और ४. वैखरी)।

◆◆प्रार्थना◆◆

जिनके मुख की आभा 'काम-देव' के मङ्गल-गृह के समान है, जिनकी दोनों भृकुटियाँ काम-देव के गृह-द्वार पर शोभा-रूपी झूलती हुई तोरण के समान हैं, वे समस्त मङ्गलों की मङ्गल-भूता माता श्रीत्रिपुर-सुन्दरी मुझे मङ्गल प्रदान करती रहें।

***

(१८) श्रीवक्त्र-लक्ष्मी-परीवाह-चलन्मीनाभ-लोचना

उक्त नाम द्वारा देवी की आँखों की उपमा मछली से दी गई है। यह मछली अबाध-गतिक लक्ष्मी अर्थात् विज्ञान-शक्ति या 'प्रकाश-शक्ति-रूपिणी' के मुख के जल-प्रवाह की सर्वदा चलायमान मछली है। यह मनस्तत्व की द्योतक है।

मछली से दूसरा तात्पर्य यह है कि मछलियाँ अपने बच्चों का पोषण दृष्टि-मात्र से करती हैं, उसी प्रकार भगवती भी अपने भक्तों व बच्चों का पोषण नयनों के कटाक्ष मात्र से करती हैं।

◆◆प्रार्थना◆◆

जिनके मुख से शोभाओं का स्रोत बह रहा है और बहती हुई शोभाओं के मध्य जिनके नेत्र चलती हुई मछली के समान हैं, वे भगवती ललिताम्बा मुझे कृपा-पूर्ण कटाक्ष से निहारती रहें।

***

(१९) श्रीनव-चम्पक-पुष्पाभ-नासा-दण्ड-विराजिता

देवी के नासा-दण्ड (नाक) की उपमा नए या अर्ध-विकसित (कली नहीं) चम्पा पुष्प से की गई है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि शरीर के वर्ण और नासा-दण्ड के वर्ण में भेद है, जो रहस्य-गर्भित है।

शरीर का वर्ण–उदय-कालिक सूर्य के सदृश सिन्दूर-जैसा लाल है, परन्तु नाक का वर्ण पीत है। ऐसे असामञ्जस्य का कारण यह है कि नाक–घ्राणेन्द्रिय है, जिसकी तन्मात्रा गन्ध है, जो पृथ्वी का पाँचवाँ विशेष गुण है।

पीत-वर्ण–पृथ्वी का द्योतक है। यही नहीं, पीत-वर्ण–क्रिया-शक्ति का भी द्योतक है, जैसा कि श्रुति (पञ्च-ब्रह्मोपनिषत्) कहती है–'वर्ण पीतं क्रिया-शक्तिः, सर्वाभीष्ट-फलं-प्रदम्'। यहाँ नासा-दण्ड की क्रिया है श्वास-प्रश्वास अर्थात् 'प्राण-क्रिया-शक्ति'। इसी से पीत-वर्ण चम्पक पुष्प से उपमा दी गई है।

◆◆प्रार्थना◆◆

जिन भगवती की नासिका नवीन चम्पा के पुष्पों की भाँति सुन्दर सुगन्ध बरसाने वाली हैं, वे श्रीललिताम्बा मेरा कल्याण करें।

***

(क्रमशः)

उपयोगी पुस्तकें

भगवती शतक	१०)
भक्ति-योग	१०)
भगवती मानस-पूजा-स्तोत्र	१०)
भागवत धर्म का प्राचीन इतिहास	१५)
भैरवी-चक्र-पूजन	६)
मन्त्र-कल्पतरु, पुष्प-१, २	७०)
मन्त्र-सिद्धि का उपाय	६)
मन्त्र-कोष	३००)
मन्त्रात्मक-सप्तशती (सजिल्द)	५००)
महा-विद्या स्तोत्र	१०)
महा-गणपति साधना	३५)
मुद्राएँ एवं उपचार (सचित्र)	२५)
महा-शक्ति-पीठ विन्ध्याचल	४०)
मन्त्र-योग	१०)
रमा-परायण	३५)
राम अङ्क	१०)
राज-योग	१०)
रास-लीला-विज्ञान	१०)
ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-पूजा	२५)
ललिता-सप्तशती	४५)
लेख-संग्रह-स्वामी दिव्यानन्द जी	५)
लघु चण्डी	१५)
वन्दे मातरम्	५)
वैदिक देवी-पूजा पद्धति	५)
वाम-मार्ग	२०)
विशुद्ध चण्डी (श्रीदुर्गा-सप्तशती)	४०)
विज्ञान-योग	१०)
शाबर-मन्त्र-संग्रह (बारह भाग)	४६०)
शाक्त धर्म क्या है?	१५)

शत-चण्डी-विधान	२५)
शिव-शक्ति-अङ्क	५०)
श्रीचक्र-रहस्य	२०)
श्रीविद्या-स्तोत्र पञ्चकम्	३५)
श्रीविद्या-सपर्या-वासना	१००)
श्रीत्रिपुरा महोपनिषद्	१०)
श्री विद्या-साधना (५ पुष्प)	२००)
सप्तशती तत्त्व	४०)
सम्पादक के संस्मरण	५०)
साधक का संवाद	२५)
सौन्दर्य-लहरी	१५)
सौन्दर्य-लहरी के यन्त्र-प्रयोग	२०)
सार्थ सौन्दर्य-लहरी	८०)
सप्त-दिवसीय सप्तशती-पाठ	३५)
सम्पुटित सप्तशती	४५)
सविधि श्रीरुद्र-चण्डी	१०)
सांख्यायन तन्त्र (हिन्दी सारांश सहित)	१००)
साधना-रहस्य	६०)
सार्थ चण्डी (श्री दुर्गा सप्तशती)	२५०)
स्वर-विज्ञान	७५)
हवनात्मक सप्तशती	१००)
हठ-योग	१०)
हिन्दी कुलार्णव तन्त्र	१००)
हिन्दी कौलावली-निर्णय	२५)
हिन्दी महा-निर्वाण तन्त्र	१५०)
हिन्दी शाक्तानन्द-तरङ्गिणी	१५)
हिन्दुओं की पोथी	२५)
होलिका-महिमा एवं पूजन-विधि	५)
होमेज टू एनसेस्टर्स (पितृ-पूजा)	२०)
आगमोक्त योग-साधना (अंग्रेजी में)	१०)

श्रीचण्डी-धाम, अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६ फोनः ०५३२-२५०२७८३, ०९४५०२२२७६७